छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास : भाद्रपद-आश्विन, संवत् 2074

सितम्बर 2017

ओ३म्

अंक 144, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

दण्डी स्वामी विरजानन्द जी सरस्वती

छत्तीसगढ़ प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित
तुलाराम आर्य कन्या गुरुकुल आश्रम गोहड़ीडिपा (राजपुर)
जिला रायगढ़ में अध्ययनरत् छात्राएँ

उपनयन संस्कार के अवसर पर उपस्थित ब्रह्मचारी, आचार्य व पदाधिकारीगण,

वेदप्रचार कार्यक्रम में उपस्थित सभा के पदाधिकारीगण

राजधानी रायपुर के विभिन्न आर्यसमाजों व शैक्षणिक संस्थाओं में संपन्न श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर उपस्थित सभा के पदाधिकारीगण, शिक्षक–शिक्षिकाएँ व छात्र–छात्राएँ

देवव्रत आचार्य

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष – १३, अंक ३ ओ३म् मास/सन् – सितम्बर २०१७

विक्रमी संवत् – २०७४

सृष्टि संवत् – १,९६,०८,५३,११९

दयानन्दाब्द – १९४

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सभ्रसभ्रकम्,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री जोगीराम आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 9977152119)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक :
श्रीनारायण कौशिक

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

विषय – सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	अहर्निश प्रवृत्त स्तोम	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	"चरित्रवान् युवा के हाथों हैं– देश का स्वर्णिम भविष्य"	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	ईश्वर की विशेष रचना – मानव जीवन	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	०८
४.	प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का लालकिले की प्राचीर से देशवासियों को ....सम्बोधन	मनमोहन कुमार आर्य	१०
५.	श्राद्ध एवं तर्पण	लक्ष्मी स्वर्णकार	१२
६.	शिक्षक दिवस का महत्व	राजश्री कासलीवाल	१४
७.	रावण अभी मरा नहीं	नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'	१५
८.	वेद सूक्त–भारतीय दर्शन का प्रतिबिम्ब	आनन्द प्रकाश गुप्त	१७
९.	कविता– "हिन्दी मोहन मेरा"	डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी	२०
१०.	चिंतन के चार बिन्दु	अजय शर्मा	२१
११.	हमारे आदर्श –दण्डी गुरु विरजानन्द...	डॉ. अशोक आर्य	२४
१२.	आर्यसमाज के एक औरसितारे का अवसान		२५
१३.	स्वस्थ एवं दीर्घायु के लिए महत्वपूर्ण जानकारी	दीनानाथ वर्मा	२७
१४.	होमियोपैथी से सफेद दाग का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	२८
१५.	समाचार प्रवाह		२९

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

वार्षिक शुल्क–१००/– दसवर्षीय–८००/–

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक – आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

वेद वेदामृत

अहर्निश प्रवृत्त स्तोम

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

मम त्वा सूर उदिते, मम मध्यन्दिने दिवः।
मम प्रपित्वे अपि शर्वरे वसो, आ स्तोमासो अवृत्सत ॥ ऋग्. ८.१.२९

ऋषिः **मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वौ**। देवता **इन्द्रः**। छन्दः **वृहती**।

● **(वसो)** हे निवासक इन्द्र परमात्मन्! **(सूरे उदिते)** सूर्य के उदित होने पर **(मम)** मेरे (स्तोत्र) **(दिवः)** दिन के **(मध्यन्दिने)** मध्याह्न में **(मम)** मेरे (स्तोत्र) **(प्रपित्वे)** सायंकाल में (और) **(अपि शर्वरे)** रात्रिकाल में **(मम स्तोमासः)** मेरे स्तोत्र **(त्वा)** तुझे **(आ अवृत्सत)** मेरी ओर लाते हैं।

हे इन्द्र! मेरे हृदय में सम्राट् परम प्रभु! हे परमैश्वर्यशालिन्! हे दुःख-दुर्गुण-विदारक! हे शूर! हे मुझ असहाय के परम सहायक! तुम्हारे प्रति मेरे स्तोत्र अहर्निश प्रवृत्त हो रहे हैं। जब उषा की पावन किरणें अन्धकार को चीरती हुई आकाश और धरित्री-तल पर अवतीर्ण होती है तथा ज्योति के परम स्रोत सूर्य का उदय होता है, तब मैं स्तोत्रों से तुम्हारा महिमा-गान करता हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि रात्रि के गमन और दिवस के आगमन का यह मोहक और प्रभावोत्पादक घटना-चक्र तुम्हारे ही द्वारा संचालित हो रहा है। जब मध्याह्न-काल में मरीचिमाली सूर्य गगन के मध्य आ विराजते है और अपनी सम्पूर्ण तीव्रता के साथ तपने लगते हैं, उस समय भी हे इन्द्रदेव! मेरे स्तोत्र तुम्हारा गान करने लगते हैं, क्योंकि प्रभाकर की इस मध्याह्नकालीन तीव्र प्रभा के स्रोत भी तुम ही हो। जब सायंकाल होता है, सूर्य भगवान् अपनी मरीचियों को समेटेने लगते हैं संध्या की रक्तिमा प्रतीची में उमड़ आती है, उस समय भी हे देवाधिदेव! मैं भावविभोर होकर तुम्हारे ही स्तुति गीत गाता हूँ, क्योंकि संध्या-काल के इस मोहक दृश्य के स्रष्टा भी तो तुम ही हो। जब चारों ओर रात्रि का सन्नाटा छा जाता है, शुक्ल पक्ष की स्निग्ध चांदनी या कृष्ण पक्ष की कृष्णवासना अंधियारी द्यावापृथिवी में व्याप्त हो जाती है, मुस्कराती तारावली गगन में खिल उठती है, तब भी हे परमेश! मैं तुम्हारी ही स्तुति-वन्दना करता हूँ, क्योंकि प्रतिदिन रुप बदल-बदलकर आती हुई ज्योत्सनामयी रजनियों और अन्धकारपूर्ण निशाओं के जन्मदाता भी तो तुम्हीं हो। इस प्रकार विभिन्न कालों में किये जाते हुए ये मेरे सबल स्तोत्र तुम्हें रिझाते हैं, तुम्हें मेरी ओर खींच लाते हैं। तब मैं और तुम मिलकर कविगोष्ठी रचाते हैं, मैं तुम्हारे स्तुतिगान गाता हूँ, तुम मेरे लिए प्रेरक गीत गाते हो।

संस्कृतार्थ :- १. वृतु वर्तने, णिच् लङ्, छान्दस रुप।

सम्पादकीय

"चरित्रवान् युवा के हाथों है-देश का स्वर्णिम भविष्य"

वैज्ञानिक पद्धति के इस युग में जितना मनुष्य की भौतिक सुख-सुविधाओं का विकास हुआ है उतना ही उसकी नैतिकता का ह्रास हुआ है। यह वैज्ञानिक प्रगति की चकाचौंध में फंसा निराश और हताश होकर किसी तरह जीवन व्यतीत कर रहा है या फिर सुख और विलासिता में मदान्ध होकर अपने जीवन को गंवा रहा है। मानव-जीवन कितना अमूल्य है इसका इन्हें ज्ञान ही नहीं रहता। देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए आज के युवा वर्ग को अपना जीवन व समय राष्ट्र के उद्धार करने में लगाना चाहिए। राष्ट्र को उन्नत करने में त्याग, तपस्या और बलिदान की आवश्यकता है। यह रास्ता संकटमय है। परन्तु यह समय की मांग है कि कितनी ही कठिनाईयाँ क्यों न आये युवा-वर्ग को राष्ट्र के निर्माण में संलग्न होना ही चाहिए। राष्ट्र के निर्माण में युवा तभी सफल हो सकते हैं जबकि देश के ईमानदार, साहसी, कर्त्तव्यपारायण, सहिष्णु, परिश्रमी व उदार नागरिक बनें। यदि युवा वर्ग अपने कर्त्तव्य का पूर्णतया पालन करते हैं, देश के हित को सर्वाधिक महत्व देते हैं, स्वार्थ का त्याग करते हैं तो ही देश उन्नति के शिखर पर जा सकता है। हमारे देश का इतिहास ऐसे युवा वीर देशप्रेमियों से भरा पड़ा है जो इनकी रक्षा और विकास के लिए ही सदा प्रयत्नशील रहे।

देश में आज भ्रष्टाचार का बोलबाला है ईर्ष्या-द्वेष का रोग छूत की तरह फैल रहा है। साम्प्रदायिकता का जहर नस नस में घुल रहा है। जाति-भेद, रंग-भेद, धर्म-भेद आदि भेद-भावों के वैमनस्य का दावानल सुलग रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति में युवा वर्ग का उत्तरदायित्व इन विषमताओं को समाप्त करने का है। इन कठिनाईयों पर, इन समस्याओं पर वे प्रेम और आपसी सद्भाव से ही विजय प्राप्त कर सकते हैं। चरित्रवान युवा ही सुन्दर समाज का निर्माण कर सकने में सफल हो सकते हैं।

संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं, उन्होने चरित्र के बल पर ही समाज में सम्मान प्राप्त किया। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, जिन्होने मर्यादा की खातिर अपना जीवन सदा ही आपत्तियों में बिताया, लेकिन मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने देश में फैली अराजकता तथा कूप मण्डूकता का छिद्रान्वेषण किया। स्त्री-जाति का प्रचार किया। स्वामी विवेकानन्द ने अपने विचारों से देश को

समुन्नत किया। इन सब विभूतियों के चरित्र महान् थे। इसीलिए ये समाज के आराध्य बन गए तथा हमारे लिए प्रकाश स्तम्भ बन गए। अच्छा व्यवहार युवा वर्ग के चरित्र निर्माण की नींव है जिस पर सुन्दर जीवनरुपी भवन को बिना किसी समस्या के खड़ा किया जा सकता है। चरित्र सबसे बड़ा धन है। जिसके पास निर्मल और पवित्र चरित्ररुपी धन है। वही मनुष्य वास्तव में धनवान् है, ऐश्र्यवान् है। चरित्र-सम्पन्न व्यक्ति का सारे संसार में मान होता है। वह मानवता रुपी आकाश में उसी तरह चमकता है जिस तरह सितारों के बीच चन्द्रमा। हीरे-मोती-माणिक्य पहनने वाले मनुष्य के आभूषणों की चमक चरित्रवान् मनुष्य के व्यक्तित्व के सामने फीकी पड़ जाती है। अन्य आभूषणों को चोर चुरा सकता है। अन्य आभूषणों को पहनने वाला मनुष्य किसी की ईर्ष्या द्वेष का पात्र बन सकता है। परन्तु चरित्रवान् मनुष्य सबकी श्रद्धा का, प्रेम का पात्र होता है। गीता में कहा गया है -

यद् यदाचरति श्रेष्ठस्तद्तद्देवेतरो जनः, स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥

अर्थात् चरित्रवान् एवं श्रेष्ठ पुरुष जो आचरण करते हैं, अन्य लोग उसी का अनुसरण करते हैं। वे सत्पुरुष दूसरों के पथ-प्रदर्शक बन जाते हैं। सच्चरित्रता में वे सामान्य गुण भी आ जाते हैं जो प्रत्येक युवक को अपनाने चाहिए। जैसे - माता-पिता का आज्ञापालन, गुरुजनों का आदर, छोटों के साथ स्नेह का व्यवहार, तथा मित्रों के प्रति प्रेम, तथा आत्मीयता। ऐसे युवा को सभी प्यार की दृष्टि से देखते हैं, विद्यालय उस पर गर्व करता है। माता-पिता को उस पर गर्व होता है। सभी उसका नाम लेने में प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

ईश्वर की ओर से इस संसार में जो प्राकृतिक सुविधाएँ हमें प्राप्त हैं, उनमें से एक है समय ! हम खोया हुआ धन, पुनः खोजकर कर प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु खोया हुआ समय वापिस नहीं लौटा सकते। इसलिए समय का महत्व पहचानते हुए युवा वर्ग को समय का सदैव सदुपयोग करना चाहिए। जो युवक समय के महत्व को ध्यान में रखकर देश के कल्याण में लग जाते हैं वही समाज में श्रद्धा के पात्र बन जाते हैं। युवा वर्ग के चरित्र-निर्माण के बिना राष्ट्र की उन्नति की कल्पना ही नहीं की जा सकती। युवा शक्ति अपरिमित शक्ति का स्रोत है। यदि उनकी शक्ति राष्ट्र के निर्माण के कार्यों में लग जाए तो राष्ट्र का समुचित और शीघ्र विकास सम्भव है।

चरित्र एक ऐसा अनमोल हीरा है जो अपने सामने आने वाले हर समस्या रुपी पत्थर को काट फेंकता है। लेकिन यदि किसी का चरित्र मैला है तो समझ लीजिए वह व्यक्ति समाज पर बोझ है। हमारे बुजुर्ग आरम्भ से ही बच्चों को चरित्र निर्माण की शिक्षा देते रहे। किसी भी देश व समाज को उन्नति के रास्ते पर ले जाने के लिए वहां के युवा वर्ग का विशेष योगदान होता है और यदि युवाओं में चरित्र का अभाव हो तो वह देश व समाज कभी उन्नति नहीं कर सकते। जापान जैसे छोटे देश की उन्नति और विकास का कारण है वहां का युवावर्ग। जब युवावर्ग चरित्रवान् और गुणवान् होता है तो उसका लाभ सारे समाज को मिलता है।

जापान का युवावर्ग हड़तालों, तोड़-फोड़, लड़ाई-झगड़ों आदि में नहीं फंसता। वे लोग राष्ट्र के प्रति समर्पित है। जहां भी, जिस कारखाने या दफतर आदि में वे काम करते हैं पूरी एकरुपता व ईमानदारी से करते हैं। यदि उन्हें सरकार या अपने प्रबन्धकों से किसी बात की शिकायत हो तो वे काम बन्द या हड़तालें नहीं करते अपितु अधिक काम करके व शान्तिपूर्ण ढंग से हर समस्या का निपटारा करते हैं। भारत में हजारों युवा पढ़ लिखकर डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर बनते हैं। अधिकांस की यही सोच रहती है कि वे अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, कैनेडा

आदि देशों में जाकर नौकरी करें। क्यों ? क्योंकि वहां उन्हें अधिक वेतन मिलता है। सुख-सुविधायें मिलती है और जिस देश की मिट्टी, पानी, हवा धूप आदि में पल-बढ़ कर वे यहां तक पहुंचे हैं, वह देश उन्हें अच्छा नहीं लगता है। कितना अच्छा हो यदि वे अपने ज्ञान का उपयोग अपने देश के विकास में करें। लेकिन उनमें शुरु से ही ऐसे उच्च चरित्र के गुण भरे नहीं गए। वे पैसे और सुख-सुविधाओं की चकाचौंध में खोए और खोते चले जाते हैं।

दूसरी तरफ बड़ी-बड़ी डिग्रियां प्राप्त कर युवक अपने ही देश में सरकार को चूना लगा रहे हैं। सीमेंट की जगह रेत की दीवारें बनवाना, रिश्वत लेना, सरकारी अस्पतालों में भी मरीजों से इलाज के पैसे लेना, स्कूल, कालेज में पढ़ाई के नाम-पर फर्ज पूरा कर घर में ट्यूशनों की कक्षाएँ लगाना आदि उच्च चरित्र की कोटि में नहीं गिने जाते। देश के युवा का चरित्र उच्च बने इसके लिए उच्च चरित्र प्रदान करने वाले स्रोत-माता-पिता, अध्यापक वर्ग, परिवार के बड़े लोग अत्यधिक सहायक सिद्ध हो सकते हैं। लेकिन यहां भी एक बात अक्सर सुनने को मिलती है - हमें समय नहीं मिलता बच्चों से बतियाने का, उन्हें देखने, समझने, समझाने, सुनने का। अरे भई, जब आप ही अपने बच्चों को चरित्र निर्माण का कोई उपदेश नहीं देंगे तो कौन देगा ? हमें मिलकर युवा वर्ग को अच्छे चरित्र के निर्माण की ओर अग्रसर करना है ताकि युवा वर्ग के भविष्य के साथ-साथ देश का भविष्य भी उज्ज्वल बन सके। धन के बल पर या ऊँचे औहदे पर बैठ कर कोई बड़ा नहीं बन जाता है। यूं तो कौआ भी महलों के शिखर पर जा बैठता है। पर इससे वह गरुड़ थोड़े ही बन जायेगा। वह तो ऊंची जगह पर बैठने के बाद भी अपने कमजोर चरित्र के कारण धूर्त ही रहेगा। उसे खाने को चाहे जितनी अच्छी-अच्छी चीजें दो आखिर वह गन्दगी में चोंच मारेगा ही। इसलिए पढ़-लिख कर, बड़े अधिकारी बन कर, बड़े नेता बन कर भी जब कोई गलत कार्य करता है, भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है तो उस व्यक्ति की इज्जत नहीं रहती। जबकि दूसरी तरफ अच्छे चरित्र वाला व्यक्ति जीवन में चाहे किसी भी स्थान पर रहे, कैसा भी काम करे। समाज उसके गुणों के कारण लाभान्वित होता है। अतः युवा वर्ग को चरित्ररुपी वृक्ष को सींचना चाहिए इसकी छाया में विकास सम्भव है।

किसी ने लिखा है - **निर्धन धनवान से डरता है निर्बल बलवान से डरता है, मूर्ख विद्वान् से डरता है किन्तु चरित्रवान् से ये तीनों डरते हैं इसलिए चरित्रवान् बनें।** शास्त्रकार कहता है - **"आचार हीनं न पुनन्ति वेदाः"** अर्थात् चरित्रहीन व्यक्ति को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते। यह वही देश है जहां चरित्र की शिक्षा लेने के लिए देश देशान्तर एवं द्वीप द्वीपान्तर से जिज्ञासु आते थे। महराज मनु ने स्पष्ट लिखा है -

"एतद् देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः,
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥ "

किन्तु आज ऐसे देश में चरित्र का संकट इस कदर छा जाएगा यह सपने में भी नहीं सोचा था कि एक बेटी को अकेली रास्ता चलना भी कठिन हो जाएगा। अपने स्वर्णिम अतीत को याद करते हुए पुनः अपनी योग्यता, क्षमता और सामर्थ्य के अनुसार देश के सर्वांगीण विकास में आज युवा शक्ति को प्रयास करने की आवश्यकता है। **"जब जब युवा जागे हैं देश के संकट भागे हैं"** मेरे देश के युवा जागेंगे और मेरा भारत पुनः विश्व गुरु का गौरव हासिल करेगा।

- आचार्य कर्मवीर

वैचारिक ईश्वर की विशेष रचना-मानव जीवन

– डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

ईश्वर ने हमें श्रेष्ठ कर्म करने तथा परोपकार के लिए जन्म दिया है, सबसे यथायोग्य धर्मानुसार व्यवहार करना चाहिए। जैसे परमात्मा सब पर उपकार कर रहा है व पुरुषार्थ कर रहा है वैसे ही हमें भी परोपकार करना चाहिए और जैसा कि ईश्वर के गुण न्याय, धारण, दया आदि है हमें भी इन गुणों का आचरण करना चाहिए। वह परमेश्वर हमारा पालन कर रहा है उसने पृथ्वी पर समस्त पदार्थ स्वर्ण, चांदी, जल, मिट्टी, वायु, प्रकाश, सूर्य, चन्द्रमा आदि सभी कुछ दिया है। हमें उसकी कृति अर्थात् रचना का उपकार नहीं भूलना चाहिए।

उसने पर्वत नदी, समस्त वनस्पति औषधियाँ अन्न फल, पुष्प व वायु आदि दिए हैं। इनके बिना हमारा जीवन कुछ भी तो नहीं है। पीने के लिए दूध जिसे पी कर बलवान होते हैं। उदर पूर्ति हेतु अन्न व फल और प्यास लगे तो पानी और श्वास लेने को स्वच्छ वायु दी है धरती पर जो भी सम्पदा है वह मनुष्य व अन्य जीवों के लिए दी है।

मनुष्य को चाहिए कि जैसे ईश्वर मनुष्य की रक्षा कर रहा है पुत्रवत् पालन कर रहा है। हमारा भी कर्त्तव्य है कि हम उसका सम्मान करें उसकी भक्ति करें उपासना करें। उसका प्रत्येक दिन धन्यवाद करें। दिन भर हम कर्म करते हैं थक जाते हैं इसलिए सोने के लिए उसने रात्रि बना दी परन्तु कुछ प्रकाश भी रहे इसलिए चन्द्रमा की रोशनी कर दी। जैसे प्रातः व सायं होती है वह अपने कर्म को नहीं भूलता हम भी प्रातः व सायं उसकी संध्या उपासना किया करें।

परमात्मा ने यह जगत् तो बनाया ही है हमें वेद का ज्ञान भी दिया है यह मानवीय धर्म पर आधारित है। जैसे ईश्वर सब पर उपकार करने वाला है पक्षपात रहित न्यायकारी है दयालु व कृपालु है वैसा ही वेद है। जो सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है हमें वेदानुसार आचरण करना चाहिए धर्म पर चलना चाहिए मनुष्य के लिए वेद में ज्ञान है जीवन में श्रेष्ठ गुणों को धारण करना चाहिए। कर्म करने हेतु उसने हमें स्वतन्त्र छोड़ा है। अच्छे कर्म करेंगे तो अच्छा फल मिलेगा बुरे कर्म करेंगे तो बुरा फल मिलेगा, फल देना उसका अधिकार है और कर्म करना हमारा कर्त्तव्य है। गीता में कहा है ***कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचनः।***

हमें दूसरों के साथ वही व्यवहार करना चाहिए जैसा हम दूसरों से अपने लिए चाहते हैं। हम चाहेंगे कि कोई हमसे बुरा न बोले हमें मारे नहीं हमें धोखा न दे हमारे साथ अन्याय न करें। हम भी दूसरों के साथ बुरा न करें, बुरा न बोलें, हिंसा न करें, किसी के साथ अन्याय व पक्षपात न करें।

यदि हम ऐसा किसी के साथ करते हैं, मारते, हिंसा करते, पक्षपात करते हैं तो वह गुण ईश्वरीय नहीं। आज अनेक लोग पशु पक्षियों की हत्या करते हैं। मार कर खा जाते है। यह ईश्वरीय गुण नहीं है अधर्म है। ईश्वर ने किसी जीव को मान कर खाने का कहीं भी उपदेश नहीं दिया अपितु वेद में सभी के सुख की कामना की है। सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना है वैदिक धर्म में। वेद के अनुसार मानव मात्र के लिए सुख की कामना की गयी है। ऐसा नहीं कि केवल हिन्दू ही सुखी हो या ईसाई व केवल मुसलमान ही सुखी हो ऐसा नहीं व ऐसी भावना है। उत्तर दक्षिण वाले भूगोल के अनुसार निश्चित दिशा या स्थान वाले ही प्रसन्न या सुखी हों और यही नहीं मानव ही सुखी हो सभी जीव जगत वनस्पति जगत जल थल आकाश वायु की स्वच्छता पवित्रता की भी भावना है।

कितनी विचित्र कृति है उसकी, जन्म से लेकर मृत्यु तक जब तक हमारा जीवन है वह सदैव एक पिता की भांति हमारे साथ रहता है हमारा उपकार करता है। पक्षपात नहीं करता वेद ज्ञान का प्रकाश इसीलिे किया है कि हम सत्य रुप में श्रेष्ठ व मानवीय गुण वाले बनें। ईश्वर ने हमें जन्म दिया है उनमें अनेक पवित्र आत्माएँ हैं जो सद्कर्म सद्व्यवहार श्रेष्ठता पवित्रता द्वारा मुक्ति के लिए साधन कर

मोक्ष के आनन्द को प्राप्त करती है मन को वश में रख जितेन्द्रिय होकर आत्मा को परमात्मा से जोड़ अलौकिक आनन्द को प्राप्त करती है। इसलिए परमात्मा ने हमें उत्पन्न किया है। अतः हमें यह नियम आदि द्वारा बुराईयों को त्यागना व अच्छाईयों को ग्रहण करना चाहिए तथा मोक्ष प्राप्ति हेतु तत्पर रहना चाहिए।

कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा रखनी चाहिए। पुरुषार्थ करना चाहिए परमात्मा पुरुषार्थी है सबका ध्यान रखता दिन व रात को बनाया, जन्म-मृत्यु व पूरे जन्म के कर्मों को देखना, उनका फल देना सूर्य चन्द्रमा का घूमना ऋतुओं का आना जाना आदि उसके ही कार्य है। सबके उपकार हेतु दिया है।

कुर्वन्ने वेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं्समाः ।
एवं त्वयि नान्पथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ।।

यजु. अ. ४० म.

परमेश्वर यहां आज्ञा देता है कि मनुष्य सौ वर्ष पर्यन्त अर्थात् जब तक जीवे कर्म करता हुआ जीवे आलसी कभी न रहे। ऐसा उपदेश परमात्मा ने दिया है कि हमें जीवन भर सद्कर्म करते रहने चाहिए परन्तु आलसी व्यक्ति और जो अन्यायकारी दुराचारी हैं बिना कर्म किए ही अथाह धन आदि आमोद व प्रमाद के साधन एकत्र करते जिसके लिए अन्यों के साथ विश्वासघात, रिश्वत खोरी, चोरी, लूटपाट, ठगी आदि बूरे कर्म करते हैं उन्हें बुरे कर्मों के लिए पाप लगता और ईश्वर के नियमों के विरुद्ध बुरे कर्मों को वह क्षमा नहीं करता उनको दण्ड अवश्य देता है। पाप का धन भले ही परिवारी जन सब प्रयोग करते हैं परन्तु जो पाप कर्म करता है फल वही भोगता है अन्य नहीं।

मनुष्य को वही कर्म करने उचित है जो परोपकार की भावना से हों किसी को शारीरिक मानसिक व आत्मिक कष्ट न हो। श्रेष्ठता पूर्वक अच्छे कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा रखें। कर्म को ही जीवन का उद्देश्य माने आलसी न हो, अपितु कर्मशील बने रहें। इस लेख में का यही उद्देश्य है कि जैसी परमेश्वर की आज्ञा है मानव को मानव धर्म के अनुरुप सुकर्म करते हुए संसार की उपकार की भावना से मोक्ष के साधन जुटाते हुए ही जीवनयापन करते रहना चाहिए। सदा सत्य बोलें सत्याचरण करें। झूठ, चोरी, हिंसा, क्लेश, द्वेष आदि कुटिल भावनाओं से दूर रह मन को आत्मा से जोड़े, आत्मा को परमात्मा से लगाने का प्रयत्न करते रहें। यही प्रयोजन है ईश्वर ने मनुष्य को जन्म दिया है जीवन में सत्याचार व परमेश्वर का ध्यान करना हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

पता : स्ट्रीट नं.2, चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा-203131

राष्ट्र भाषा हिन्दी

हिंदी गौरव, हिंदी है मेरी पहचान ।
हिंदी पर तन-मन-धन सब अर्पण ।।
देवनागरी लिपि सहज-सरल-निर्मल ।
क्षेत्रवाद का हिंदी ही है एकमात्र हल ।।
भारत माता के माथे की बिंदी हिंदी ।
जन-जन की सद् सोच-समझ है हिंदी ।।
लिखना-पढ़ना मातृभाषा में गौरव की बात ।
हिंदी है देवसंस्कृत की अनमोल सौगात ।।
हिंदी हर भाषा को स्नेह से गले लगाये ।
तभी तो राष्ट्रभाषा हिंदी कहलाये ।।
आओ साथी मिलकर इसकी लाज बचाएँ ।
मातृभाषा हिंदी का खोया सम्मान लौटाएँ ।।

समय बड़ा बलवान

समय बड़ा बलवान रे साथी, समय....
देखो समय-समय के खेल निराले
समय पे छलके मदिरा के प्याले
समय पे बीत गई वो हंसी जवानी
प्यास लगी पर मिला नहीं समय पे पानी ।।
परिवर्तन है नाम समय का रे साथी
सुंदर-सुंदर मुखड़े समय पे सूखे-पिचके
छोड़ कुकर्म, काम करो कुछ नीके
समय पे मजबूत लोहा भी गल जाता
पर्वत पिस-पिस समय पे चूरन बन जाता ।।
समय बड़ा बलवान रे साथी, समय ....

रचयिता : मुकेश ऋषि कुमार आर्य

'प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का लालकिले की प्राचीर से देशवासियों को ओजस्वी, तेजस्वी व सारगर्भित सम्बोधन के लिए हार्दिक अभिनन्दन'

सामयिक

– मनमोहन कुमार आर्य

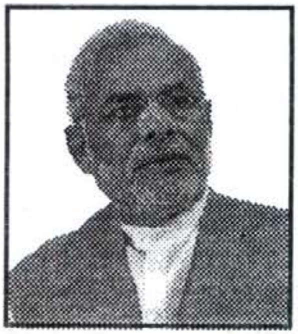

स्वतन्त्रता दिवस के पुण्य अवसर पर देश के लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लालकिले की प्राचीर से देशवासियों को सम्बोधित किया। उनका सम्बोधन ओजस्वी, तेजस्वी, प्रभावशाली, प्रेरणादायक एवं प्रशंसनीय था। एक अच्छे व आदर्श प्रधानमंत्री से देशवासी जो अपेक्षा करते हैं वह सब बातें सूत्र व सिद्धान्त रुप में उन्होंने अपने सम्बोधन में कही है। देश की उन्नति में सेना, किसानों व मजदूरों का महत्वपूर्ण योगदान है। इनकी भी चर्चा सम्बोधन में कही। भ्रष्टाचार व कालाधन देश की उन्नति में बाधक है, इसका उल्लेख व सरकार की भ्रष्टाचार वे बेनामी सम्पत्ति आदि के विरुद्ध की गई कार्यवाही का उल्लेख भी प्रधानमंत्री जी ने अपने सम्बोधन में किया है। आतंकवाद का दृढ़ता से मुकाबला किया जायेगा, कहीं कोई कसर नहीं रखी जायेगी, इसका भी प्रशंसनीय उल्लेख प्रधानमंत्री जी ने किया। प्रधानमंत्री जी के भाषण में अनेक विषय थे जिसका उन्होंने उल्लेख किया। इन सबके लिए मोदी जी सभी देशवासियों के आदर व प्रशंसा के पात्र हैं।

देश की उन्नति अर्थात् सुख-समृद्धि-शान्ति में **'जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग का एक प्रमुख सर्वमान्य सत्य सिद्धान्त है।'** हमें लगता है कि विज्ञान में तो यह नियम भलीभांति काम करता है, परन्तु सामाजिक मान्यताओं, भोजन छादन व मत-पन्थ-सम्प्रदायों में यह नियम ठीक से कार्य करता है तो एक से अधिक मत, धर्म, सम्प्रदाय, पन्थ आदि न होते और न ही इस देश में कोई सामाजिक कुरीति, अन्धविश्वास व मिथ्या परम्परा होती। न जन्मना जातिवाद होता और न छूआछूत और ऊंच-नीच की भावना ही होती। ऐसा न होने पर राजनीति में वोट बैंक की राजनीति भी न होती। इसके कारण देश को जो हानि हुई है वह भी न होती। अनेक-मत-मतान्तरों व समाज में लिंग भेद व इससे जुड़ी घटनायें सामने आती हैं, वह भी न होती। इसकी जड़ में कहीं न कहीं अथवा किसी न किसी रुप में मत-मतान्तरों की असत्य मान्यताएँ व परम्परायें जमी पड़ी है। जब तक इसे दूर नहीं किया जायेगा, देश व समाज की स्थिति में सुधार नहीं हो सकता।

स्वामी दयानन्द, मर्यादा पुरुषोत्तम राम और योगेश्वर श्रीकृष्ण की परम्परा के महापुरुष, युग पुरुष, ऋषि वा महर्षि, देवता, विद्वान्, ज्ञानी, वेदभक्त, ईश्वरभक्त, मानवता के सबसे व सबसे प्रमुख आदर्श पुरुष थे। उन्होंने मनुष्यों की सबसे बड़ी समस्या, मत-सम्प्रदायों में विद्यमान असत्य व असत्य पर आधारित मान्यतायें, परम्पराओं व पूजा पद्धतियों को जाना था। उन सभी समस्याओं का समाधान भी उन्होंने अपने लघुग्रन्थ स्वमन्तव्यामन्तव्य वा आर्योद्देश्यरत्नमाला दिया है। उन्होंने अपना जीवन देश में अज्ञान, असत्य व अन्धविश्वास को भगाने में ही लगाया और उसी के लिए उन्होंने अपना बलिदान भी दिया। देश को महाभारत से पूर्व के अज्ञान व अन्धविश्वासों से रहित स्वर्णिम दिनों में ले जाने के लिए उन्होंने अनेक प्रयत्न किये। सत्यार्थ प्रकाश उनके जीवन की देश व विश्व को सबसे बड़ी देन है, जिसमें वह मानव जीवन के लिए समान रुप से लाभकारी सत्य सिद्धान्तों व मान्यताओं का विधान करते हैं व मत-मजहब-धर्म-सम्प्रदाय आदि की असत्य व पक्षपात पर आधारित मान्यताओं, सिद्धान्तों व परम्पराओं का खण्डन वा आलोचना करते हैं। यदि विश्व समुदाय ने उनकी बातों

को अपने निहित स्वार्थों से ऊपर उठकर विचार किया होता तो पक्षपात, अन्याय, शोषण, सामाजिक, अन्याय, उपेक्षा तथा हिंसा आदि से रहित एक नया विश्व निर्मित किया जा सकता था।

स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश में जो लिखा है, वह वेद की शिक्षाओं पर आधारित है और वेद की सभी शिक्षायें मानव निर्मित न होकर ईश्वर से उद्बुद्ध संसार के सभी मनुष्यों के लिए ईश्वरीय आधेश है। जब तक ईश्वरीय आदेश वेद की शिक्षाओं की उपेक्षा की जाती रहेगी, समाज व देश में सुख व शान्ति उत्पन्न नहीं हो सकती। मत-मजहब-सम्प्रदाय आदि रहेंगे तो आतंकवाद जैसे अनेक सामाजिक रोग आदि भी बने रहेंगे। अतः सत्यार्थप्रकाश के परिप्रेक्ष्य में पुनः विचार करने की आवश्यकता है।

प्रधानमंत्री जी के अनेक संवैधानिक उत्तरदायित्व हैं जिन्हें उन्हें पूरा करना है तथा वह भलीभांति सन्तोषजनक तरीकों से उन सब को पूरा कर रहे हैं। देश के जो पूर्व कुछ यशस्वी व कीर्तिशेष प्रधानमंत्री हुए हैं उनके समान श्री नरेन्द्र मोदी जी वर्तमान की कठिन व जटिल स्थिति में देश को सफलतापूर्वक आगे बढ़ा रहे हैं। देश की जनता को उन पर पूरा विश्वास है। उनके राजनैतक प्रतिद्वन्दी अपने राजनैतिक स्वार्थों के कारण उनकी सभी वा अधिकांश बातों का विरोध करते हैं। यहां तक कि भारतीय सेना द्वारा की गई सर्जिकल स्ट्राइक का भी प्रमाण मांगते हैं। वह यह दिखाने का प्रयत्न करते हुए दीखते हैं कि यह वास्तविक व यथार्थ नहीं अपितु यह हुआ ही नहीं।

अतः देशवासियों को नकारात्मक राजनीति करने वाले दलों से सावधान रहना होगा और सक्षम एवं योग्य नेता को ही आगे बढ़ाना होगा तभी देश, सुरक्षित, सुखी व शान्त रह सकता है। हम प्रधानमंत्री जी का आज लालकिले की वेदी से दिये गये ओजस्वी व तेजस्वी भाषण के लिए अभिनन्दन करते हैं।

पता - १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

कलि माहात्म्य

निर्वीर्या पृथिवी निरौषधिरसा नीचा महत्वंगता,
भूपाला निज कर्मधर्मरहिताः विप्राः कुमार्गे रताः
भार्याभर्तृविरोधिनी पररताः पुत्राः पितुर्द्वेषिणी
हा कष्टं खलु वर्त्तते कलियुगे धन्या नरा ये गताः ।। (माघ)

भावार्थ :- पृथ्वी सम्प्रति निर्वीर्य हो चली है। पराक्रम उठ गया है। ओषधियां रस विहीन (गुणविहीन) हो गई। छोटे लोग बड़े-बड़े महत्व के पदों पर पहुंच रहे हैं। राजाओं के राज्य चले गए, वे अपने कर्मों, धर्म्मों से पृथक् हो चले हैं। पत्नी पति से द्वेष करने लग गई है और अन्य पुरूषों में प्रेमासक्त है। पुत्र पिता के शत्रु बन गए हैं।

हा... बहुत ही कष्ट है कि - यह कलियुग आ गया है, कलियुग। धन्य हैं वे पुरूष जो अपने जीवन की सांध्यवेला पूर्ण कर इस संसार से चले गए हैं। धन्य हैं।

- सुभाषित सौरभ

स नः पिता जनिता स उत बन्धुर्धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यो देवानां नामध एक एव तं सम्प्रश्नं भुवना यन्ति सर्वा ।।

अर्थ : वह परमात्मा हमारा उत्पत्तिकर्ता, रक्षक और बन्धु है। परमात्मा ही सारे ब्रह्माण्ड को जानता है। सब देवताओं के नाम उसी के हैं। परमात्मा एक प्रश्न (रहस्य) है।

वैदिक मान्यता के सन्दर्भ में श्राद्ध एवं तर्पण

– **लक्ष्मी स्वर्णकार**, एम.ए., बी.एड.

आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में पितरों का श्राद्ध व तर्पण पक्ष होता है जो भ्रान्त प्रथा का स्वरूप लेता जा रहा है। इस कारण पितर, श्राद्ध व तर्पण शब्दों की वैदिक मान्यता के सन्दर्भ में विवेचना आवश्यक है। "**पालयन्ति रक्षन्ति वा ते पितरः**" अर्थात् पालन-पोषण और रक्षण करने वाले पितर कहाते हैं। गोपथ ब्राह्मण में भी लिखा है "देवा वा एते पितरः, स्विष्टकृतो वै पितरः" और सुख सुविधाओं द्वारा पालन, पोषण करने वाले और हित सम्पादन करने वाले लोग पितर कहलाते हैं। शतपथ ब्राह्मण (२/१/३/४) के अनुसार "**मर्त्याः पितरः**" यानि मनुष्य ही पितर है। यजुर्वेद का मन्त्र (२/३१) पितरों को इस प्रकार स्पष्ट करता है -

अत्र पितरो मादयध्वं यथा भागमा वृषायध्वम्।
अमीमदन्त पितरो यथा भागमावृषायिषत ॥

भावार्थ : ईश्वर आज्ञा देता है कि मनुष्य लोग माता-पिता आदि धार्मिक सज्जनों को समीप आए हुए देखकर उनकी सेवा करें। प्रार्थनापूर्वक कहें कि हे पितरों ! आप लोगों का आना हमारे सौभाग्य का सूचक है। आप हमारे गृह में आओ और वास करो हम आपके प्रिय पदार्थों को यथायोग्य यथा सामर्थ्य उपस्थित करेंगे। जिनसे सत्कार को प्राप्त होकर आप प्रसन्न होइये और अपने अनुभव के आधार पर हमारे मार्ग प्रशस्त कीजिए ताकि हम वृद्धि को प्राप्त होवें, अच्छे कामों को करके आनन्दित रहें।

वृहत् पाराशर स्मृति में पितरों का वर्गीकरण कर १२ (बारह) प्रकार के पितर बताये गये हैं :- *१. सोमसदः २. अग्निष्वाताः ३ बर्हिषदः ४. सोमपाः ५. हर्विर्भुजः ६. आत्यपाः ७. सुकालीनः ८. यमराजः ९. पितृ-पितामहाः १०. मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः ११. सगोत्रः १२. आचार्यादि सम्बंधिनः।*

इस प्रकार उपर्युक्त गुणों वाले जीवित व्यक्तियों को ही पितर कहा गया है। मृत-पितरों की कल्पना भ्रान्ति मात्र है। श्राद्ध अर्थात् 'श्रत्' सत्य का नाम है। "श्रत्सत्यं दधाति यया क्रियया सा "श्रद्धा" श्रद्धया यत् क्रियते तच्छ्राद्धम्" जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाए उसको "श्राद्ध" और जो श्रद्धा से कर्म किया जाए उसका नाम "श्राद्ध" है और तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितृन् तत्तर्पणम् जिस जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता-पितादि पितर प्रसन्न हों और प्रसन्न किये जाएं उसका नाम तर्पण है परन्तु यह जीवितों के लिए मृतकों के लिए कदापि नहीं। मनु महाराज ने मनुस्मृति के अध्याय ३ श्लोक ७० में यज्ञों का वर्णन में इस प्रकार किया है -

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथि पूजनम् ॥

उपरोक्त अनुसार ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ तथा अतिथि यज्ञ बताये गये है। महर्षि दयानन्द सरस्वती पंचमहायज्ञ विधि में लिखते हैं कि इन पंचमहायज्ञों को प्रतिदिन करना मानवमात्र का धर्म है। महर्षि पितृयज्ञ को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि जो पितर विद्यमान हो अर्थात् जो जीवित हो उनको प्रीति से सेवनादि से तृप्त करना तर्पण और श्रद्धा से प्रीतिपूर्वक सेवा करना है वह श्राद्ध कहलाता है व जो सत्य विज्ञान-दान से लोगों का पालन करते हैं वे पितर कहलाते हैं।

मनुस्मृति में श्राद्ध को दैनिक कर्म बताया गया है

कुर्यादहरहः श्राद्धमन्नाद्येनोदकेन वा।
पयोमूलफलैर्वापि पितृभ्यः प्रीतिमावहन् ॥ (३/८३)

अर्थात्- गृहस्थ का कर्त्तव्य है कि माता-पिता आदि पूज्य महानुभावों का अन्नादि भोज्य पदार्थों से तथा जल, दूध और कन्द-मूल-फलादि से प्रतिदिन श्राद्ध करें। यजुर्वेद का मंत्र २/३४ इस प्रकार है-

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्।
स्वधा स्थ तर्पयत मे पितृन् ॥

भावार्थ :- ईश्वर आज्ञा देता है कि सब मनुष्यों को पत्नी पुत्र

और नौकर आदि को कहना चाहिए कि तुमको हमारे पितर अर्थात् माता-पिता आदि विद्या के देने वाले व सेवा के योग्य है। जैसे कि इन्होने बाल्यावस्था व विद्यादान के समय पाले हैं, वैसे हम लोगों के बीच में विद्या का नाश और कृत्घ्नता आदि दोष कभी न प्राप्त हों। महर्षि वाल्मीकि कृतघ्नता को महापाप मानते हैं रामायण में लिखते है -

"गोघ्ने चैव सुरापे च, चौरे भग्नव्रते तथा।
निष्कृतिर्विहिता सद्भिः कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः ॥"

अर्थात् - गोहत्यारे, शराबी, चोर और व्रत भंग करने वाले का प्रायश्चित सत्पुरूषों ने बताया है, किन्तु कृतघ्न (किये उपकार को न मानने वाले) का कोई प्रायश्चित नहीं है। (क्योंकि यह तो महापाप है)। जब श्राद्ध व तर्पण पितृयज्ञ के अन्तर्गत प्रतिदिन करने का कर्म है तो केवल आश्विन मास के पन्द्रह दिनों में एक पितर के लिए केवल एक दिन श्राद्ध करने का क्या औचित्य ? क्या वे शेष ३६४ दिन भूखे प्यासे पड़े रहते हैं ? साथ ही उन्हें केवल कौवच-कौवच के रूप में ही क्यों आह्वान किया जाता है ? लेकिन प्रश्न निरूत्तर है। कभी-कभी पौराणिक भाई यह कहते हैं कि इस बहाने कौअें जैसे पक्षी की भी पेट भराई हो जाती है किन्तु पंच महायज्ञों में जो प्रतिदिन करणीय है उनमें चौथा यज्ञ बलि वैश्वदेव यज्ञ है जिसमें मूक पशु पक्षी, कृमि, कौआ, पाप रोगी तथा चण्डाल आदि के लिए भी व्यवस्था है। मनुस्मृति (०३/९२) में मन्त्र आया है

शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम्।
वायसानां कृमीणां च शनकैनिर्वपेद् भुवि ॥

अर्थ - कुत्ता, पतित, चण्डाल, पापरोगी, काक (कौआ) और कृमि इन छह नामों से छह भाग पृथ्वी पर धरे और वे भाग जिस जिस नाम के हो उस-उस को देवें।

जैसा पौराणिकों पितरों (मृतक) को कौआ या पशु पक्षी आदि के रुप में आह्वान करने का मानते हैं वैसा तो कदापि संभव नहीं तथा न ही शास्त्रोकृत। क्योंकि अपने किए कर्मों से ही जीव जाति (योनि), आयु और भोग प्राप्त करता है। पूर्व सम्बन्धी इसमें कुछ भी सहायक नहीं।

श्रीकृष्ण के गीता में दिये उपदेश भी इसकी पुष्टि करते हैं। हे अर्जुन ! मेरे और तेरे अनेक जन्म बीत चुके हैं। मैं उन सब जन्मों को जानता हूँ, तू नहीं जानता। एक अन्य स्थान पर वैसे ही मृत्यु होने पर अन्य देह की प्राप्ति होती है।

इस प्रकार जब व्यक्ति का मरने के बाद किस स्थान पर जन्म हुआ, किस परिवार में अथवा देश में, यहां तक किस योनि में गया है ज्ञात नहीं तो उसका श्राद्ध व तर्पण कैसे होगा ? हमारे परिवार में नवजात शिशु कहां से आया है, किस योनि अथवा परिवार से आया है, उसके लिए किन्हीं द्वारा किया गया दान जब हमारे पास नहीं पहुंचता तो हमारे द्वारा किया गया दान उनके पास कैसे पहुंचेगा। निश्चित श्राद्ध व तर्पण जीवित पितरों का पितृ यज्ञ के अन्तर्गत ही करने योग्य है। यहीं मानव के लिए कल्याणकारी है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है -

तृतीय यज्ञ है पितृ यज्ञ, पितृ माता की सेवा करना,
आचार्य व विद्वानों की शिक्षा निज चित में धरना।
जो माता-पिता, गुरुजन की सेवा से चित्त चुराए
निश्चय समझो बस वह प्राणी घोर क्लेश उठाए।।

पता : बांगड़ी मोहल्ला, बीकानेर (राजस्थान)

"दंगे"

वे दंगा साथ में लिए घूमते हैं
कब नरसंहार की इच्छा जाग पड़े
सो उनकी गाड़ी में हमेशा रहता है
मरा सुअर, मरी गाय, बस फेंकना भर तो है
शेष काम के लिए, उनके साथ सेवक हैं
चुनाव निकट आते ही उनका मन
शैतानी करने को होता है
हम तो हिन्दू-मुसलमान रहे
और उनके लिए मात्र वोटर
हम गर्व से कहते हैं १० हिन्दू मारे ८ मुसलमान
हमारी इसी गर्व से वे सरकार बनाते हैं
और हम उनकी खुराक दंगा उनकी जेब में
और हमारा दिमाग हमारे घुटने में
वे शैतान हैं हम हिन्दू मुसलमान हैं
यहां आदमी तो अब रहते नहीं।
और भगवान कुछ कहते नहीं।

- देवेन्द्र कुमार मिश्रा
पाटनी कालोनी, भरत नगर छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

प्रासङ्गिक

शिक्षक दिवस का महत्त्व

● ५ सितम्बर पर विशेष ●

– राजश्री कासलीवाल, नई दिल्ली

'शिक्षक दिवस' कहने सुनने में तो बहुत अच्छा प्रतीत होता है। लेकिन क्या आप इसके महत्त्व को समझते हैं। शिक्षक दिवस माने साल में एक दिन बच्चों द्वारा शिक्षक को भेंट किया गया एक गुलाब का फूल या कोई भी गिफ्ट। नहीं, यह शिक्षक दिवस मनाने का सही तरीका नहीं है।

शिक्षक दिवस हम सभी मनाते आए हैं। आपने भी मनाया है। हमने भी मनाया है। लेकिन इस दिन को मनाना तभी सही मायने में सार्थक सिद्ध होगा जब आप अपने शिक्षक के प्रति सही नजरिया रखें। पिछले कुछ ही समय में ऐसी कई घटनाएँ देश और दुनिया में घटी है जो आपके व्यवहार, वातावरण और संस्कारों के अनुरुप नहीं है। चाहे वह घटना सभरवाल कांड हो या फिर किसी शिक्षक द्वारा भरी क्लास में या एकांत में स्कूल छात्रा के कपड़े का नाप लेना हो या फिर किसी शिक्षक द्वारा बच्चे के कपड़े उतारकर उसे दंडित करना हो।

यह सब बातें हमें किस ओर इंगित करती है। यह समझना आज बहुत जरुरी हो गया है। या तो शिक्षक वो शिक्षक नहीं रहे जो अपने छात्रों को सही संस्कार दें सकें। या फिर आजकल के शिक्षकों में अहंकार, अत्याचार, ईर्ष्या और द्वेष का भाव बहुत ज्यादा मात्रा में आ गया है। यह सब मैं इसलिए नहीं लिख रही हूँ कि मैं शिक्षकों का आदर करना नहीं जानती, या फिर मैं शिक्षकों के खिलाफ हूँ।

बात ऐसी नहीं है ... रोजाना हमारे आमने-सामने, हमारे आस-पास घटित होने वाली उन घटनाओं ने सोचने पर मजबूर कर दिया है कि आखिर ये सब हो क्या रहा है ? क्या किसी भी छात्र संगठन के छात्रों द्वारा शिक्षकों को अपमानित करना, उनके साथ मारपीट करना ये वाक्या किस हद तक सही है। अभी हाल में एक स्कूल १०वीं-११वीं के छात्र ने अपने टीचर की जमकर धुनाई कर दी थी। उस छात्र ने ऐसा क्यों किया यह सोचना भी एक बहुत बड़ा पहलू है। अगर हम मान भी लेते हैं कि हो सकता है कि उस बच्चे की कोई मजबूरी रही हो या उस बच्चे को गुस्सा बहुत ज्यादा आता हो तो शिक्षक द्वारा कहीं गई बातों का, शिक्षक द्वारा उस छात्र के साथ किए गए व्यवहार से आहत होकर उस बच्चे ने इतना घिनौना कदम उठाया। बात जो भी हो लेकिन तरीका तो गलत ही हुआ।

शिक्षक को हम विद्या का वरदान देने वाले भगवान का दर्जा देते आए हैं। उनके प्रति हमारे मन में असीम प्यार, और स्नेह छुपा होता है। तो फिर छात्र द्वारा अपने शिक्षक के साथ किया गया यह व्यवहार कैसा ? क्या आजकल के बच्चों को स्कूलों में सही शिक्षा, सही वातावरण नहीं मिल रहा है या आपके घर के संस्कारों में कुछ कमी है। जो आप जरा-जरा सी बात पर मरने-मारने पर उतारु हो जाते हैं।

अगर आप शिक्षक दिवस का सही महत्त्व समझना चाहते हैं तो सर्वप्रथम आप इस बात को हमेशा ध्यान रखें कि आप एक छात्र हैं, और अपने शिक्षक से उम्र में काफी छोटे हैं। और फिर हमारे संस्कार भी तो हमें यही सिखाते हैं कि हमें अपने से बड़ों का आदर करना चाहिए। अपने गुरु का आदर-सत्कार करना चाहिए। उनकी बात को ध्यान से सुनना और समझना चाहिए। अगर आपने अपने क्रोध, ईर्ष्या को त्याग कर अपने अंदर संयम के बीज बोएं तो निश्चित ही आपका व्यवहार आपको बहुत ऊंचाईयों तक ले जाएगा। और तभी हमारा शिक्षक दिवस मनाने का महत्त्व भी सार्थक होगा।

आओ, थोड़ा हंस ले

जो पढ़े व पढ़ावे वह है लेक्चरर

जो न पढ़े पर पढ़ावे वह है रीडर

जो न पढ़े न पढ़ावे वह है प्रोफेसर

जो न पढ़े न पढ़ावे न पढ़ने दे वह है प्रिंसिपल

विजयादशमी पर विशेष

रावण अभी मरा नहीं

- नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

विजयादशमी का पर्व बड़े उत्साह और जोश के साथ रावण और उसके परिवार के पुतलों के दहन के साथ मनाया जाता है। इससे पूर्व रामलीला और राम रावण युद्ध का मंचन भी किया जाता है। विजयादशमी का पर्व बुराईयों पर अच्छाईयों, अधर्म पर धर्म की, असत्य पर सत्य की, दानवों पर देवों की विजय के प्रतीक के रुप में मनाया जाता है। परन्तु प्रश्न उठता है कि क्या हम इस पर्व को मनाने के उद्देश्यों को प्राप्त कर पा रहे हैं। क्या हम रावण रुपी बुराईयों को अपने व्यक्तिगत जीवन से, अपने परिवार, समाज व राष्ट्र से समाप्त कर पाए या केवल अपनी सुविधा अनुसार एक प्रतीक रुप में पुतलों का दहन कर बेकार प्रसन्न हो रहा है। यदि हमने इन बुराईयों को मारे बिना ही रावण दहन किया है तो निश्चित रुप से हम कलयुगी रावण के मायाजाल में फंस गए हैं और इस युग के शातिर रावण ने खुद ही राम रुप धर कर हमें धोखा दिया तथा रावण ने ही रावण के पुतलने का दहन किया है। पुतला दहन के समय रावण अट्टाहस करके हम सभी पर हंसता है और हमें बताता है कि मैं तो तमान बुराईयों कलुषित भावनाओं काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष के रुप में तुम सभी के अंदर सुरक्षित बैठा हूँ और तुम सभी खुद भी मेरा ही रावण रुप हो और पुतले को जलाकर बेकार भ्रमित हो रहे हो।

आइये अब व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर इन रावण रुपी बुराईयों और उनके निवारण पर चिंतन करते हैं । सर्वप्रथम हमारे व्यक्तिगत जीवन में जब तक काम, क्रोध, लोब, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, अंहकार जैसी कलुषित भावनाएँ विद्यमान हैं तब तक हम नहीं कह सकते है कि हमने रावण को मार दिया। रावण को मारने के लिए हमें सबसे पहले झाडू उठाकर अपने मन में छिपी गंदगी को साफ करना होगा। रावण वध के उपरांत मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का उत्तर उनकी सादगी सरलता और रावण के अहंकार को स्पष्ट रुप से दिखलाता है जब श्रीराम ने बड़ी सहजता से महाविद्वान्, महापराक्रमी, महाबलशाली रावण को मैंने नहीं बल्कि उसके "मैं" ने मार डाला। अब विजयादशमी के पर्व पर हम चिंतन करें कि क्या हमने अपने जीवन से रावण रुपी कलुषित भावनाओं और अहंकार को समाप्त कर दिया और यदि आत्मचिंतन में इसका उत्तर नकारात्मक हो तो समझ लीजिए रावण अभी मरा नहीं।

पारिवारिक जीवन में क्या हम एकदूसरे की भावनाओं को सम्मान, अपने कर्त्तव्य कर्मों की निर्वहन और रिश्तों की मर्यादा का पालन करते हैं ? क्या हमने पिता के रुप में स्वयं आदर्श बनकर पुत्रों के समक्ष खुद को अनुकरणीय बनाकर प्रस्तुत किया है ? क्या पुत्र के रुप में अनव्रतः पितु पुत्रों अपने पिता के समस्त सद्गुणों संस्कारों व शुभसंकल्पों को अपनी बुद्धि और विवेक की छलनी से छान कर अपने जीवन में धारण करने का प्रयास किया है ? यदि पिता और पुत्र के रुप में हम ऐसा करने में असमर्थ रहे हैं तो समझ लीजिए रावण अभी मरा नहीं।

क्या माताएँ प्रथम शिक्षक के रुप में **'माता निर्माता भवति'** अपने बच्चों को वैदिक संस्कार देकर उनका चरित्र निर्माण कर रही हैं या केवल अपनी किटी पार्टियों, फैशन, सौंदर्य तक ही सीमित हैं और चाहती है कि देशभक्त भगतसिंह सरीखे क्रांतिकारी पैदा तो हों, परन्तु पड़ोसियों के घर। यदि माताएँ अपनी संतान का चरित्र निर्माण करने में सर्वथा असमर्थ हैं और कैकेयी मंथरा की तरह व्यवहार करती हैं तो समझ लीजिए रावण अभी मरा नहीं। यदि पुत्रियां लज्जा शील आचरण के सौंदर्य को छोड़कर पाश्चात्य फैंशन और नग्नता की अंधी दौड़ में शामिल हो चुकी हैं तो समझिए अभी रावण मरा नहीं क्योंकि पुत्रियों पर तो दायित्व बेटी, पत्नी और माँ क रुप में और अधिक बढ़ जाता है। क्या भाई भाई आपस में स्नेह रखते हैं? क्या भाई आपस में **'मा भ्राता भ्रातरम् द्विक्षत'** के वेद के आदेश अनुसार

आपस में ईर्ष्या, द्वेष ना रखकर आपस में प्रेम से रहते हैं ? लंकेश रावण की हार के कारणों की विवेचना में यह भी आता है कि श्रीराम के साथ उनका भाई लक्ष्मण सदैव खड़ा था और रावण का भाई विभीषण रा ण के अत्याचारों से त्रस्त होकर रामदल में जा मिला था और रावण की सभी कमजोरियां श्रीराम को विभीषण के माध्यम से ही पता चल गई थी जिससे रावण का अंत सुनिश्चित हुआ था। यदि भाई भाई से व्यवसाय, संपत्ति, अधिकारों को लेकर झगड़ा करते हैं तो निश्चित रुप से रावण अभी मरा नहीं और इस युग में तो औद्योगिक घरानों के अंबानी लखानी बंधुओं के झगड़े सर्वविदित हैं।

सामाजिक स्तर पर क्या हम अपने समाज से लूट, हत्या, बलात्कार व अन्य अपराधों को दूर कर पाए ? यदि हम समाज में जाति वर्ग भेद को समाप्त नहीं कर पाए और आज भी दलितों पर अत्याचार हो रहे हैं तो समझ लीजिए रावण अभी मरा नहीं। हम तो जातिविहीन समाज की परिकल्पना करते हैं और वर्ण व्यवस्ता को भी जन्मना नहीं अपितु कर्मणा मानते हैं और **जाति ना पूछो साधु की** कहते हैं तो समाज में हमें समानता, समरसता और दलितोद्धार करना होगा। यदि समाज में जातिगत विद्वेष आज भी है और हम कबीलों में बंटे आरक्षण आदि अधिकारों के लिए लड़ रहे हैं तो समझ लीजिए रावण अभी मरा नहीं। हम तो प्राकृतिक संसाधनों के अत्याधिक दोहन करते हुए संग्रह करने की प्रवृत्ति के शिकार होकर नदियों के पानी पर भी आपस में लड़ने पर आमदा हैं तो समझ लीजिए रावण अभी मरा नहीं। अपने भौतिक संसाधनों, सुख सुविधाओं के एकत्रीकरण के चक्कर में हमने पृथ्वी का संतुलन बिगाड़ दिया और कभी भी वृक्ष लगाकर, यज्ञ करते हुए पर्यावरण शुद्धि का कार्य नहीं किया तो समझ लीजिए रावण अभी मरा नहीं।

राष्ट्रीय स्तर पर क्या हम वेद की आज्ञा **'राष्ट्रौ वैः मुष्टिः'** अर्थात् राष्ट्रीय एकता को कायम रखा पाए ? हम तो कहीं प्रांत, कहीं भाषा, कहीं पानी, कहीं आरक्षण तो कहीं धर्म के नाम पर अपने स्वार्थों के वशीभूत आपस में ही लड़ते रहें। हमारी स्थिति बद से बदत्तर हो गई जब तुष्टिकरण के लिए हममें से कुछ तथाकथित धर्मनिरपेक्ष, बुद्धिजीवियों ने आतंकियों का पोषण करके आतंक के विरुद्ध सेना की कारवाई पर ही प्रश्नचिहन् लगा दिए। यदि आतंक के विरुद्ध राष्ट्र रक्षा की इस लड़ाई में हम एकजुट नहीं हुए तो समझ लीजिए रावण अभी मरा नहीं। यदि देश में आज भी नक्सलवाद, माओवाद, अलगाववाद, उग्रवाद जैसे वाद विवाद मौजूद हैं तो समझ लीजिए रावण अभी मरा नहीं।

यदि सही मायनों में विजयादशमी के पर्व पर रावण का दहन कर एक आदर्श आर्यावर्त रामराज्य की स्थापना करना चाहते हैं तो अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय जीवन से इन सभी रावण रुपी बुराईयों को समाप्त करते हुए आर्यपुत्र मर्यादा श्रीराम के आदर्शों को स्थापित करना होगा। यदि हम ऐसा कर पाए तभी हम कह सकते हैं कि हम विजयादशमी के पर्व को मनाने के अधिकारी हैं।

पता - ६०२, जी.एच. ५३, सैक्टर-२०, पंचकूला हरियाणा

माँ मुझे लो आँचल में

माँ, ओ माँ,
लो मुझे आंचल में
मत मारो मुझे, अपने गर्भ में
कुल का दिया, भले ही मैं न हूँ
पोते की ज्योति, मैं जीऊंगी जब तक
दोनों ही कुटुम्ब का, करुंगी मैं उद्धार
होऊंगी नहीं मैं, कभी भी गद्दार
मम्मी-पापा मुझे भी, यह संसार देखने दो
दादाजी-दादी जी, मुझे जीने दो
घर की मैं हूँ पोती, घर की मैं हूँ ज्योति
संस्कृति संस्कार की, निभाऊंगी मैं सब
ग्रंथों की सुरक्षा के लिए, फिर भी जन्म दो
मम्मी-पापा मुझे, यह संसार देखने दो।

डॉ. सुभाष नारायण भालोराव "गोविन्द"
"अवन्तिका", ए-२८, न्यू नेहरु नगर कालोनी,
ठाठीपुर, मुरार, ग्वालियर-४७४०११

विश्लेषणात्मक वेद सूक्त-भारतीय दर्शन का प्रतिबिम्ब

- आनन्द प्रकाश गुप्त

भारतीय विचारधारा और उसके दर्शन से परिचित हुए बिना हमारा सारा पौराणिक ज्ञान अधूरा है। भारतीय विचारं का निरन्तर विकास तभी हमें ज्ञात होता है, जब हम अपने इतिहास पर दृष्टि डालते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से जब हम पूर्वकालीन बौद्धिक जीवन की सामाजिक अवस्थाओं का अध्ययन करते हैं तब हम पाते हैं कि यह हमारी वैदिक ऋचाओं में बड़े ही अद्भुत विश्वास से उदधृत किया गया है। वैदिक काल, जिसे इतिहासकार १५०० ई. पूर्व से ६०० ई. पूर्व का समय बताते हैं। इसी समय भारत में आर्यों ने अपने आवास स्थान बनाये और साथ ही साथ संस्कृति तथा सभ्यता का विकास हुआ।

वन प्रांतर में शिक्षा केन्द्रों की स्थापना कर गुरुकुल प्रणाली से पवित्र ज्ञान को व्याख्यायित करने का कार्य हुआ। वैदिक सूक्तों के माध्यम से ऋषियों ने अज्ञान रुपी अंधकार पर विजय पाने का बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया। ऋग्वेद के सूक्त जिनमें प्रधान है, जो आर्यों के परवर्ती काल के धार्मिक कृत्यों एवं दार्शनिक ज्ञान के आदिस्त्रोत तो हैं ही साथ ही उनका अध्ययन परवर्ती विचारधारा को ठीक-ठीक समझने के लिए भी आवश्यक है।

वैदिक सूक्तों के रचयिता ऋषि प्राकृतिक दृष्यों को देखकर अपने सरल स्वभाव एवं ऋजुता के कारण अनायास ही अत्यंत प्रफुल्लित हो उठते थे। विशेषकर कवि स्वभाव के कारण उन्होंने प्राकृतिक पदार्थों को ऐसे प्रगाढ़ मनोभावों और कल्पनाशक्ति द्वारा देखा कि उन्हें वे आत्मा की भावना से परिपूर्ण प्रतीत होने लगे। वे प्रकृति के दृश्यों में ऐसे खो गये कि वे उन्हें दैवीय घटनाएँ मानने लगे। उन्होंने सूर्य की जीवनदाता मान उसे एक जीवित सत्ता से गुणगान करने और उसकी समस्त क्रियाओं, उदय और अस्त आदि के बारे में छन्दों के माध्यम से गुणगान करने लगे। उनके लिए प्रकृति एक जीवित सत्ता थी, जिसके साथ वे प्रेम-संबंध जोड़ सकते थे। प्रकृति के कुछ उज्ज्वल स्वरुप एक प्रकार से द्युलोक के ऐसे झरोखे थे जिनमें से दैवीय शक्ति नीचे के ईश्वरविहीन जगत् को झांकती सी प्रतीत होती थी। चांद सितारे अगाध समुद्र ओर अनन्त आकाश, सूर्योदय और निशा के आगमन आदि को दैवीय घटना समझा जाने लगा।

वैदिक धर्म का प्रारंभिक स्वरुप इसी प्रकार की प्रकृति पूजा था। यह सभी प्रकृति की घटनाएँ और उन्हें प्रभावित करने वाले सूर्य-चन्द्र आदि उनके देव बन गये। 'देव' शब्द का अर्थ ही 'देने वाला' हो गया। 'देव' वह है जो मनुष्य को देता है। वह समस्त विश्व को देता है। विद्वान पुरुष भी देव है क्योंकि वह अपने अन्य साथी मनुष्यों को ज्ञान का मार्ग दिखाता है।

वह विद्या या ज्ञान का दान देता है। इसी प्रकार सूर्य, चन्द्र, आकाश, जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि भी देव है क्योंकि मनुष्य जीवन के वार्धक्य, पोषण में इनका सरोकार है। **विद्वांसो हि देवाः। मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव। पिता माता और आचार्य भी देव है।** इस प्रकार हम देखते हैं कि वैदिक देवताओं के प्राकृतिक शक्तियों से साम्य स्थापित करने के समय से ही हम प्रारंभ कर सकते हैं और निर्देश कर सकते हैं कि किस प्रकार शनैः-शनैः उन प्राकृतिक शक्तियों को ही साधुवृत्त एवं अतिमानव सत्ता का रुप दे दिया गया।

वैदिक सूक्तों में बुद्धि का जो प्रकाश मिलता है वह सर्वत्र एक सा नहीं है ऋषियों ने उनमें केवल आकाश के सौन्दर्य पर और पृथ्वी की अद्भुत वस्तुओं पर विचारकर के वैदिक सूक्तों की रचना करके अपनी आत्मा के बोझ को हल्का किया। द्यौः, वरुण, उषा, मित्र आदि उनकी काव्यमय चैतसिक मानस की उपज है। क्रियाशील समूह ने दृश्यजगत को अपने-अपने प्रयोजन के अनुकूल बनाने का प्रयत्न किया। जैसे युद्ध काल में वज्रधारी इन्द्र की कल्पना की गई। भौलिक

दर्शन और अर्न्तमन के विचारों की प्रेरणा तथा इस जगत् के निजी स्वरुप को जानने और समझने की आकांक्षा सी काल के अंत में प्रकट हुई। इसी काल में मानवमन में तर्क, विचार तथा अज्ञान के कारण पूजे जाने व ले देवी-देवताओं के बारे में शंका करना एवं जीवन के रहस्यों पर विचार करना प्रारंभ किया। जब वैदिक ऋषि के मन को कुछ नहीं सूझा और मानसिक उलझन में उलझ गया तो उसने घोषणा की कि "मैं नहीं जानता कि मैं क्या हूँ, मेरा रहस्यमय आबद्ध-मन इधर-उधर भटकता है।"

वेदों और वैदिक ज्ञान के अध्येता विद्वान वैदिक सूक्तों में उल्लिखित भाव के बारे में भिन्न-भिन्न मत रखते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती मानते हैं कि ऋग्वेद के आर्य एकेश्वरवादी थे। जबकि प्रसिद्ध समाज सुधारक राजा राममोहन राय यह मानते हैं कि वैदिक देवता परमब्रह्म के भिन्न-भिन्न गुणों के आलंकारिक प्रतिनिधि के रुप में है। भारतीय मनीषी योगी अरविन्द घोष की सम्मति है कि वेद रहस्यमय सिद्धान्तों एवं गूढ़ दार्शनिक ज्ञान से भरे हुए हैं। उनके मत में सूक्तों में वर्णित देवता मनोवैज्ञानिक व्यापारों के संकेत हैं। सूर्य मेधा को उपेक्षित करता है, अग्नि इच्छा को और सोम मनोभावों को। प्रसिद्ध भारतीय भाष्यकार सायण सूक्तों में वर्णित देवताओं की व्याख्या को स्वीकार करते हैं और इसी का समर्थन यूरोपियन विद्वानों ने भी किया है। हम देखते हैं कि पहले बाह्य जगत की शक्तियों की पूजा करते-करते उपनिषदों का धर्म उन्नत हुआ।

इस पृथ्वी पर हर जगह मनुय बाह्य जगत से चलकर आभ्यांतर की ओर जाता है। उपनिषद् प्राचीन पद्धति-पूजा की ओर ध्यान न देकर मात्र वेदों में संकेत के रुप में निर्दिष्ट उच्चतम धर्म को ही विकसित करते हैं। यह व्याख्या आधुनिक ऐतिहासिक विधि और प्रारंभिक मानव संस्कृति के सिद्धान्त से बिलकुल मेल खाती है और यह सायण द्वारा प्रतिपादित-प्रतिष्ठित भारतीय मत के सर्वथा अनुकूल है।

पता : ए.एस. ३०२, सुमंगल अपार्टमेंट, लिंक रोड, बिलासपुर (छ.ग.)

सदा ब्रहमचारी

- पं. रामदेव शर्मा

आओ करें गुणगान सदा ब्रह्मचारी का
देश हितैषी दयानन्द व्रतधारी का।
पाखण्ड का दल बहुत बड़ा था,
कन-खल में, ऋषि खड़ा था,
मनु अंगद पैर गढ़ा था, धर्म ध्वज धारी का।
आओ करें .... ॥
जब तीर तर्क का छोड़ा, गढ़पाखण्ड का फोड़ा,
आये प्रलोभन भारी, संकल्प नहीं पर छूटा,
सत्य व्रत धारी का। आओ करें ..... ॥
जब ऋषि कर्णवास में आया,
ले खड़ग कर्ण सिंह आया,
स्वामी को बहुत धमकाया, दो टूक खड़ग करी ऋषि ने
सब अभिमान मिटाया अत्याचारी का॥
आओ करें .... ॥
ऋषि कहा पाप से डरना, निज देश धर्म हित मरना,
स्वाध्याय वेद का करना, नहीं संग
कभी भी करना, दुष्टाचारी का॥
आओ करें ... ॥
सच्चा इतिहास सुनाया, ऋषिवर ने हमें बताया,
श्रीराम महा पुङ्गव थे, था शुद्ध रुप दिखलाया,
कृष्ण मुरारी का॥ आओ करें ... ॥
स्वदेश, स्वराज, स्वभाषा का मन्त्र दिया था ऋषि ने,
सन्देश क्रान्ति का देकर, जोश बढ़ाया वीरों का॥
आओ करें .... ॥
पुनिर्विवाह करवा कर, विधवा का उद्धार किया है,
नारी को शिक्षित करके, बढ़ाया गौरव नारी का॥
आओ करें गुण ऋषिवर स्वामी का॥
जय कर ऋषि का गायें, संकल्प देव ये लायें,
करि पूर्ण काम दिखलाये, वेद व्रत धारी का॥
आओ करें गुण ऋषिवर स्वामी का॥

पता : ६-एच-१६, महावीर नगर, वि.यो. कोटा (राज.)

॥ ओ३म् ॥

विश्व वेद सम्मेलन

World Conference on Vedas - (१५,१६, १७ दिसम्बर २०१७)

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि दिनांक २४-४-२०१७ को आर्यसमाज डिफेन्स कालोनी दिल्ली में आयोजित आर्य विद्वानों की बैठक में निर्णय लिया गया कि आर्यसमाज की वैदिक विचारधारा को विश्व पटल पर प्रतिष्ठापित करने हेतु एक **विश्व वेद सम्मेलन** का अत्यन्त भव्य एवं प्रभावी रुप से आयोजित किया जाये।

अभी तक वेदों को प्रायः धार्मिक कर्मकाण्ड से ही जोड़कर देखा जाता है जिससे उसकी सामाजिक उपयोगिता पर जन साधारण का ध्यान नहीं जाता है। उधर द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व शांति एवं विकास के लिए यू.एन.ओ. का गठन हुआ और अप्रैल १९४८ में मानव अधिकार का घोषणा पत्र जारी हुआ यह बहुत कुछ वेद की मान्यताओं पर आधारित है। यूनेस्को ने ऋग्वेद को विश्व मानवता की प्राचीनतम धरोहर के रुप में स्वीकार किया। भारत के प्रधानमंत्री के रुप में इन्दिरा गांधी से लेकर नरेन्द्र भाई मोदी ने यू.एन.ओ. के पटल पर वेदों का संदर्भ दिया। अब उसी यू.एन. ने विश्व की १९३ राष्ट्र राज्यों को १७ चुनौतियों-गरीबी, भुखमरी, बीमारी, अशिक्षा, जलवायु परिवर्तन, आर्थिक विषमता, जाति, लिंग, मत, पंथ व क्षेत्रियता आधारित भेदभाव आदि को २०१६ से शुरु कर २०३० तक पूरा करने का संकल्प पारित किया है। पेरिस में जलवायु संकट से उबरने के लिए १९० देशों ने इसी तरह का फैसला किया है। **हमारा विश्व वेद सम्मेलन** इन सभी मुद्दों पर गंभीर विचार विमर्श-संगोष्ठी आयोजन कर अपना वैदिक घोषणा पत्र जारी करेगा। अतः इस सम्मेलन के माध्यम से यह प्रयास होगा कि आज विश्व के सम्मुख विभिन्न चुनौतियों-समस्याओं के समाधान हेतु विद्वज्जन वैदिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करें। **यह सम्मेलन दिनांक १५, १६, १७ दिसम्बर २०१७ को नई दिल्ली में होना प्रस्तावित है तथा इसे एक अभिनव रुप में आयोजित किया जायेगा।**

आनन्द कुमार
संयोजक

विश्व वेद सम्मेलन परिचर्चा हेतु विषय सूची में यू.एन. द्वारा घोषित सतत् विकास के लक्ष्य २०३०

शारीरिक उन्नति से संबंधित :- *भुखमरी उन्मूलन हेतु वैदिक योजना, खाद्य सुरक्षा एवं कृषि के सतत विकास (टिकाऊ) के विषय में वैदिक दृष्टिकोण, स्वस्थ जीवन पर वेद, जल के सतत प्रबंधन एवं उसकी उपलब्धता के विषय में वैदिक योजना, स्वच्छता एवं वेद, आधुनिक विकास का वैदिक स्वरुप, आधुनिक, सस्ती व विश्वसनीय ऊर्जा संसाधनों हेतु वैदिक योजना, आर्थिक विकास का वैदिक स्वरुप, जलवायु परिवर्तन एवं उसके प्रभाव से निपटने के लिए वैदिक उपाय, वैदिक विकास की अवधारणा में औद्योगिकीकरण का स्वरुप।* ***आत्मिक उन्नति से संबंधित :-*** *आधुनिक युग में वैदिक दर्शन की प्रासंगिकता-महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक एकेश्वरावाद एवं त्रैतवाद।* ***सामाजिक उन्नति से संबंधित :-*** *वेद एवं संयुक्त राष्ट्र का मानवाधिकार घोषणा पत्र, वेदों के विषय में प्रचलित भ्रांतियां-यज्ञ में हिंसा, मांसाहार, सुरापान, जातिवाद, मूर्तिपूजा आदि, शिक्षा एवं वेद, लैगिंक समानता एवं स्त्री सशक्तिकरण के विषय में वैदिक दृष्टिकोण, वेद एवं विज्ञान, महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य की प्रासंगिकता।*

कार्यालय पता : ७, जन्तर-मन्तर रोड, नई दिल्ली-११०००१, फोन नं. ०११२३३६७९४३, २३३६३२२१,
मोबा. ०९८१०७६४७९५, ई-मेल : vishwaved2017@gmail.com

१४ सितम्बर
हिन्दी दिवस पर

"हिन्दी मोहन मेरा"

हिन्दी है तन मेरा/हिन्दी है मन मेरा।
हिन्दी है धन मेरा/हिन्दी है जीवन मेरा।

हिन्दी हिन्दी हिन्दी हिन्दी हिन्दी नन्द मेरा।
हिन्दी मेरी भारत माता हिन्दी वन्दन मेरा।

इसमें सूर, कबीरा बसते हैं मीरा वाणी।
बोधा, आलम, कुतबन, मंझन है गंगा कल्याणी।
हुलसी से तुलसी, तुलसी से हुलसी है गुड़धाणी।
वरदाई, भूषण दूषण हित कलम बड़ी कटखाड़ी।

जय हो जय हो जय हो जय हो हिन्दी पूजन मेरा।
हिन्दी है तन मेरा .... ।

पद्मावत लिख गये जयसी उक्ति समासों वाली।
साका-जौहर दर्पण खिलजी आस उजासों वाली।
धूप रूप की अन्ध कूप की खेल-तमाशों वाली।
नागमती पतझरी पद्मिनी रुतमधुमासों वाली।

गोरा-बादल आल्हा-ऊदल है मन भावन मेरा।
हिन्दी है तन मेरा ....

हिन्दी अपनी हम हिन्दी के ऐसा भाव जगाएँ।
हिन्दी नहीं सितम्बर की ही सारे साल चलाएँ।
हिन्दी लिखें पढ़ें हिन्दी ही हिन्दी रोयें गायें।
हिन्दी बोल-बोलकर दुनियां को जयहिन्द सिखाये।

हिन्दी आत्ममुक्ति का साधन हिन्दी बन्धन मेरा।
हिन्दी है तन मेरा ....

हिन्दी के ही शब्दकोश से निकला अमर तिरंगा।
हिन्दी हैं तो कल-कल करती बहती यमुना-गंगा।
गद्य-पद्य की धाराओं पर चमके कंचन-जंगा।
सबकी जिह्वाओं पर नाचे उच्छल जलधि तरंगा।

जागो-जागो-जागो-जागो हिन्दी मोहन मेरा।
हिन्दी है तन मेरा.............

हिन्दी वतन हवन है हिन्दी गन्ध-सुगन्ध हमारी।
चिन्तन मनन कथन लेखन प्रवचन सुरभित फुलवारी।
भव्य भवन सौभाग्य सदन रक्षाबन्धन हितकारी।
जटाजूट शिव के डमरू से निकली दिव्य सवारी।

हिन्दी अपना बचपन पचन हिन्दी यौवन मेरा।
हिन्दी है तन मेरा ....

हिन्दी नहीं मात्र भाषा भारत-चेतना बतायें।
हिन्दी है गोरस की मटकी योग-क्षेम छलकायें।
हिन्दी ऋषियों की परम्परा चन्दन सा महकायें।
हिन्दी नहीं किसी से भी कम दुनियां को दिखलायें।

क्या कर लेगा 'कविर्मनीषी' छलिया नन्दन मेरा।
हिन्दी है तन मेरा, हिन्दी है मन मेरा, हिन्दी है धन मेरा।

डॉ. सारस्वत मोहन 'मनीषी', दिल्ली, मोबा. ९८१०८३५३३५, ८५२७८३५८३५

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन् महती विनष्टिः।
इस जीवन में यदि ईश्वर को जान लिया तो सफलता है, यदि नहीं जाना तो महान् हानि है अर्थात् जन्म निष्फल है।

विचारणीय चिंतन के चार बिन्दु

- अजय शर्मा

(१)

आज इस गलाकाट स्पर्धा भरी जिंदगी में हर व्यक्ति दूसरे से आगे निकलना चाहता है सफलता प्राप्त करना चाहता है। प्रश्न उठता है कि क्या व्यक्ति सफल हो पाया या नहीं ? यह सफलता आखिर है क्या ? क्या ऊँचा पद प्राप्त कर लेना सफलता है या कि अपार संपत्ति का ढेर खड़ा कर लेना सफलता कहलाएगी ? नहीं पद या सम्पदा के आधार पर सफलता का आंकलन करना सही नहीं होगा। क्योंकि यदि ऊंचा पद प्राप्त करना या अपार संपदा एकत्र करने को ही सफलता कहा जाए तो सफल लोगों को जीवन समाप्त करने की क्या आवश्यकता आन पड़ रही है । आज समाज में उच्च पद पर आसीन आईएएस अधिकारी, आईपीएस अधिकारी, डाक्टर और इंजीनियर के द्वारा आत्महत्या करने की घटनाएँ सुनाई पड़ती है। ये सारे लोग उच्च पद प्राप्त लोग थे, सुविधा संपन्न थे और समाज में इनकी प्रतिष्ठा थी फिर क्यों इन लोगों ने आत्महत्या कर पना जीवन समाप्त कर लिया। उच्च शिक्षित व सुविधा संपन्न लोगों के द्वारा की गई आत्महत्यएँ प्रदर्शित करती है कि ये लोग जीवन में कहीं न कहीं असफल रहे होगे तभी तो जीवन को समाप्त कर रहे थे, वरना सफल व्यक्ति भला जीवन को समाप्त करने की क्यों सोचेगा ? संभव है कि ये लोग कार्यक्षे६ के दबाव को सहन करने में या फिर अपने परिवेश के साथ सामंजस्य स्थापित करने में असफल रहे होगे। उच्च पद, अपार संपदा एवं सुविधाओं के संकलन को ही सफलता का आधार नहीं माना जा सकता।

यद्यपि सफलता के पैमाने भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के लिए भिन्न-भिन्न हो सकते हैं किन्तु एक ऐसा पैमाना जिसका प्रयोग बड़े जनसमूह की सफलता के परीक्षण हेतु किया जा सकता है वह है, तन, मन, जन और धन। स्वस्थ तन, शांत मन, विपदा एवं खुशी में साथ खड़े होने वाले अपने परिजन तथा अपनी व परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु पर्याप्त धन की उपलब्धता के आधार पर सफलता का आकलन किया जा सकता है। जिसके पास ये चारों हो वह ही जीवन में सफल माना जा सकता है और जिसके पास ये न हो तो वह जीवन में सफल नहीं कहा जा सकता। कोई व्यक्ति धन कुबेर हो, उसके साथ लोगों की भीड़ चलती हो किन्तु वह व्यक्ति शारीरिक रुप से स्वस्थ न हो या फिर उसके पास मानसिक शांति न हो तो भला उसे जीवन में सफल कैसे कहा जा सकता है। आज के दौर में मनुष्य ने पद प्राप्त कर लिया है, पैसा भी एकत्र कर लिया है किन्तु मन की शांति नहीं पा सका और न ही अपने शरीर को निरोगी रख सका। पैसों के पीछे वह ऐसा भागा कि उसके नाते रिश्तेदार और परिवार पीछे छूट गया। यही वजह है कि वह जीवन से भाग रहा है और ईश्वर प्रदत्त श्रेष्ठतम उपहार मानव जीवन को समाप्त कर रहा है।

(२)

मनुष्य जीवन भर आनन्द की तलाश में ही रहता है, वह सदा यही प्रयास करता है कि उसे आनन्द प्राप्त हो। साधारणतः मनुष्य अपने इंद्रियों के माध्यम से आनन्द प्राप्त करता है। नेत्रों से देखकर, कानों से सुनकर, जीव्हा से चखकर, नासिका से गंध प्राप्त कर और शारीरिक त्वचा से स्पर्श कर आनंदित होता है। अस्वस्थ व्यक्ति इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले इस आनंद को प्राप्त नहीं कर पाता। आज मनुष्य की जीवन शैली ऐसी हो गई है कि आधी से अधिक आबादी मधुमेह और रक्तचाप रोग से पीड़ित है। इन दोनों ही रोग से ग्रसित व्यक्ति के भोजन पर प्रतिबंध प्रारम्भ हो जाता है यह खाना है, यह नहीं खाना है, इतना खाना है, इससे अधिक नहीं खाना है वगैरह वगैरह। भले ही सामने नाना प्रकार के पकवानों से सजे थाल रखे हों किन्तु मधुमेह से ग्रसित व्यक्ति इन पकवानों के सेवन का आनन्द नहीं ले सकता। यदि किसी मनुय ने सुख सुविधा के तमाम संसाधन एकत्र कर लिए हों किन्तु उसके साथ खुशी बांटने वाला कोई अपना न हो या फिर उसे मानसिक शांति न हो, वह हर वक्त तनाव की स्थिति में ही रहता हो तो उसकी सफलता खोखली है क्योंकि वह उन संसाधनों से आनन्द प्राप्त नहीं कर सकता जो उसने जुटाए हैं

। **जीवन का आनन्द तब तक ही है जब तक मनुष्य उस आनन्द को भोगने की स्थिति में होता है, शारीरिक या मानसिक अस्वस्थता की स्थिति में जीवन आनन्द विहीन प्रतीत होता है** । बुजुर्गों ने कहा है दौलत के बल पर जुटाए गए संसाधन वो आनन्द प्रदान नहीं कर सकते जो आत्मीयजनों के साथ होने पर प्राप्त होता है।

(३)

आज समाज में सभी जगह धर्म का प्रसार ही दिखाई पड़ता है हर गांव शहर में थोड़ी थोड़ी दूरी पर धार्मिक स्थल बने हुए हैं, इन धार्मिक पूजा स्थलों में लोग जाते भी हैं। हर पूजा स्थल पर लोगों की बढ़ती भीड़ और चढ़ावे के रुप में पैसों की होती बरसात देखकर यह आभास होता है कि समाज में धार्मिकता बढ़ रही है। विचार करें कि जो हमें नजर आ रहा है क्या वास्तविकता भी वही है। समाज में अपराध, पापाचार और धार्मिकता एक साथ कैसे बढ़ सकते हैं ? धार्मिकता व अपराध दो विपरीत प्रवृत्तियां हैं इनका एक साथ बढ़ना असंभव है। धार्मिकता प्रकाश है तो पापाचार अंधकार है, प्रकाश के बढ़ने पर अंधकार कम होता है और प्रकाश के कम होने पर अंधकार गहराता है। प्रकाश व अंधकार का एकसाथ बढ़ना संभव ही नहीं है । हां, यह जरुर संभव है कि समाज में अधार्मिकता के बढ़ने के साथ साथ पापाचार व अपराध भी बढ़े। धार्मिकता बढ़ने पर तो पापाचार व अपराध कम होने चाहिए किंतु समाज में पापाचार व अपराध की अभिवृद्धि इस बात का द्योतक है कि समाज में धार्मिकता कम हो रही है। प्रश्न उठता है धार्मिकता क्या है? धर्मानुसार आचरण करना ही धार्मिकता कहलाता है। धर्म की पहचान कैसी हो रही है ? पूजा स्थलों की संख्या का बढ़ना, उन स्थलों पर जाने वाले लोगों की संख्या का बढ़ना और पूजा स्थल पर किए जाने वाले क्रियाकलापों का बढ़ना, पूजा स्थलों पर दिए जाने वाले दान की मात्रा का बढ़ना क्या यही धर्म कहलाता है ? नहीं यह धर्म नहीं है यह तो वे क्रियाकलाप हैं जो धर्म के नाम पर किए जाते हैं, चिंता का विषय तो यह है कि इन क्रियाकलापों को करने वाला व्यक्ति आस्तिक और धार्मिक कहलाता है। आज समाज में ऐसे ही लोगों की संख्या बढ़ रही है जिससे यह भ्रम होता है कि धार्मिकता बढ़ रही है।

गंभीर चिंतनीय विषय है कि ईश्वर को मानने वालों की संख्या तो बढ़ रही है किन्तु ईश्वर की मानने वालों की संख्या घट रही है। जी हाँ, उक्त पंक्तियों पर विचार करें ईश्वर को मानने वालों की संख्या बढ़ रही है किन्तु ईश्वर को मानने वालों की संख्या घट रही है। चाहे किसी भी धर्म के धर्मग्रन्थ को लें उस धर्म के ग्रन्थों में ईश्वर द्वारा कही गई बातें ही लिखी है। जिस भी धर्मग्रंथ को देखें सभी धर्मग्रन्तों में कुछ बातें ऐसी हैं जो सभी में उभयनिष्ठ है। ऐसा कौन सा धर्मग्रन्थ है जिसमें मानव को मानव के प्रति प्रेमभाव न रखने की शिक्षा दी गई हो, यह फिर जिसमें मानव को दूसरों को दुख देकर स्वयं को सुख प्राप्त करने की शिक्षा दी गई हो ? ऐसा कौन सा धर्मग्रन्थ है जिसमें कहा गया है कि यह संसार ईश्वर ने ही रचा है ? क्या ऐसा कोई धर्मग्रन्थ है जिसमें मनुष्य को सद्गुण त्याग कर दुर्गुणों को ग्रहण करने की सीख दी गई है ? क्या है कोई ऐसा धर्मग्रन्थ जिसमें मानव को मानवता के परित्याग का संदेश दिया गया हो ? नहीं सारे धर्मग्रंथ का यह संदेश देते हैं कि इस संसार को बनाने वाला ईश्वर है, सारे जड़ व जीव उसकी ही रचनाएँ हैं, ईश्वर की सारी कृतियां एकसमान हैं न कोई बड़ा और कोई छोटा। हमें श्रेष्ठ मानवीय गुणों के साथ ईश्वर द्वारा बताई राह पर चलना चाहिए। आज का इंसान ईश्वर को तो मान रहा है किन्तु ईश्वर वाणी जो कि धर्मग्रन्थ में लिखी है उसे नहीं मान रहा है उसे अपने आचरण में नहीं ला रहा है। इसी वजह से धार्मिकता कम हो रही है और मानवता कम हो रही है।

आज जो तथाकथित पंथ प्रचलित है उनकी उत्पत्ति पर विचार करें। इन पंथों के प्रवर्तकों ने अपने जीते जी किसी पंथ विशे, का नामकरण नहीं किया था, बल्कि उन्होंने जगह जगह घूम कर लोगों को बताया है कि मानव को समाज में कैसे रहना चाहिए। उल्लेखनीय है कि सारे पंथ प्रवर्तकों चाहे गौतम बुद्ध हो, महावीर हो, मोहम्मद हो, नानक हो या जीसस हो सभी ने इंसान को समाज में जीवन जीने की लगभग एक समान शिक्षा दी है, उन सभी ने जिस धर्म की बात की वह था मानव धर्म। उन प्रवर्तकों के पश्चात् उनके अनुयायियों ने पंथ का नामकरण किया और उसमें कुछ बातें अपने स्वार्थवश भी जोड़ दी । प्रवर्तकों की मूल शिक्षा तो गौण रह गई और अनुयायियों के द्वारा जोड़ी गई बातें प्रचलन में आ गई परिणाम ये हुआ कि समय बीतने के साथ साथ वे तथाकथित पंथ

अध्यात्म से दूर आडम्बरों से भरपूर होते चले गए। ईश्वर एक है और ईश्वर रचित इस दुनियां के निवासी मानवों का धर्म भी एक है वह है मानव धर्म । यदि प्रत्येक मनुष्य इस तथ्य को स्वीकार कर इसे अपने आचरण में लाए तो समाज में व्याप्त पंथजनित सारी बुराईयां स्वतः ही दूर हो जाएगी।

(४)

आज समाज में जो अपराध, अत्याचार व पापाचार हो रहा है उसके पीछे क्याण क्या है ? कुछ लोगों का तर्क रहता है कि यह सब तो होना ही था यह कलयुग है बल्कि अभी और भी घोर कलयुग आने वाला है। मेरा मानना है कि वे लोग जो ऐसा तर्क देते हैं वे जिम्मेदारी से भागने वाले, पलायनवादी दृष्टिकोण रखने वाले लोग हैं। मेरा तो यह भी मानना है कि सतयुग या कलयुग जैसी कोई बातनहीं है, समय सदा ही एकसमान रहता है यह तो इंसान के कर्म हैं जो समय को सतयुग या कलयुग का नाम दिलाते हैं। किसी मनुष्य के जीवन के प्रत्येक क्षण के सतयुग या कलयुग होने की संभावनाएँ बराबर रहती है। जिस क्षण मनुष्य किसी अन्य मनुष्य या जीव से प्रेमपूर्ण व्यवहार करता है, कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की किसी तरह से मदद करता है, कोई मानव किसी दूसरे के कष्टों के निवारण हेतु प्रयास करता है, कोई मनुष्य किसी दूसरे को किसी तरह की खुशी प्रदान करता है, जब एक आदमी दूसरे आदमी के काम आता है उस क्षण उसके जीवन में सतयुग घट रहा होता है। इसके विपरीत जब कोई मनुष्य किसी दूसरे जीव से घृणित व्यवहार करता है, किसी दूसरे को कष्ट पहुंचाता है, किसी दूसरे जीव को दुख पहुंचाने वाले कार्यों को अंजाम देता है, किसी दूसरे जीव के साथ अमानवीय व्यवहार करता है उस क्षण उसके जीवन में कलयुग घट रहा होता है । जिसे हम कलयुग कहते हैं उसी कालखण्ड में कुछ ऐसे लोगों ने जन्म लिया और ऐसा जीवन जीया कि वह औरों के लिए प्रेरणास्त्रोत बन गए। चैतन्य महाप्रभु वल्लभाचार्य, तुलसीदास, रविदास नामदेव, संत तुकाराम, गुरु नानक, गुरु गोविंद सिंह, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, रामकृष्ण परमहंस, मदर टेरेसा ये कुछ ऐसे लोगों के नाम हैं जिनका जन्म उस काल में हुआ था, जिसे हम कलयुग कहते हैं। कलयुग का प्रभाव इन मानवों पर नहीं पड़ा बल्कि घोर कलयुग में भी इन महापुरुषों ने ऐसा जीवन जीया, ऐसे कार्य किये जिससे वे आज महामानव के रुप में याद किए जाते हैं।

समाज की वर्तमान स्थिति के पीछे अगर कोई कारण है तो वह है मानव में मानवता की कमी । जी हाँ, आज के मनुष्य में मानवता का ह्रास तथा अमानवीयता की अभिवृद्धि परिलक्षित हो रही है। एक बालक और एक व्यस्क में मुख्य अंतर यह है कि बालक अकारण ही खुश रहता है कोई कारण होने पर भी वह दुखी होता है, दूसरी ओर एक वयस्क अकारण दुखी रहता है और खुशी के लिए वह कारण की तलाश करता है। आज एक वयस्क अकारण ही खुश क्यों नहीं रह सकता, इसके लिए जिम्मेदार कौन है ईश्वर या कि मानव ? ईश्वर ने तो उसे अकारण खुश रहने वाला बालक बनाकर इस दुनियां में भेजा था ये तो इंसान का ही दोष है कि उसने दुखी होने के लिए विभिन्न प्रकार के कारणों को तलाश लिया । पं. विजयशंकर मेहता जी ने अपने आलेख में एम शोध का जिक्र किया है जिसका परिणाम यह था कि ९५ प्रतिशत लोग अपने जीवन में दुखी हैं। एक वयस्क, बालक से अधिक शिक्षित और ज्ञानवान होता है, अल्पज्ञानी बालक खुश है और ज्ञानी वयस्क दुखी है, ऐसा क्यों ? सा विद्या या विमुक्तये । विद्या वह है जो दुखों से मुक्त कराए, किन्तु आज जो विद्या बालकों को दी जा रही है वह बालकों को दुखों से विमुक्त नहीं कर रही है बल्कि दुखों से संयुक्त कर रही है कहीं यह शिक्षा ही तो दोषपूर्ण नहीं। एक बालक जब जन्म लेता है तो वह समस्त विकारों से मुक्त और संभावना से भरपूर होता है, जैसे जैसे वह समाज में बड़ा होता है समाज उसे अपने सांचे में ढालता जाता है और उसके भीतर हिंसा, छल कपट, लोभ, स्वार्थ, द्वेष जैसे विकार घर कर जाते हैं। समाज से सारी बुराई समाप्त हो सकती है यदि बालक में जन्म के समय उसकी मासूमियत, निष्छलता, निष्कपटता, भोलेपन और नैसर्गिक प्रेम को बचाए रखा जाए।

पता : डीएवी पब्लिक स्कूल, एसईसीएल, छाल (रायगढ़)

शरीर को सजाना सभ्यता और आत्मा को सजाने की कला का नाम संस्कृति है।

हमारे आदर्श — डॉ. अशोक आर्य

दण्डी गुरु विरजानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द सरस्वती को महर्षि बनाने वाले, इतिहास में स्वर्णाक्षरों में स्थान पाने वाले दण्डी गुरु विरजानन्द जी का जन्म १८३५ वि. तद्नुसार १७७८ ई. को पंजाब के करतारपुर के समीप गंगापुर गांव के सारस्वत ब्राह्मण पं. नारायणदत्त जी के यहां हुआ। पंचवर्षीय अवस्था में चेचक के कारण आंखों की ज्योति जाती रही। पिता ने घर पर ही संस्कृत की शिक्षा दी, किन्तु छोटी आयु में ही माता-पिता ने साथ छोड़ दिया। भाई व भावज के व्यवहार से तंग आकर गृह त्याग कर ऋषिकेश व फिर कनखल चले गए। यहां स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास दीक्षा लेकर विरजानन्द नाम पाया।

कुछ समय कनखल निवास के पश्चात् काशी चले गए, जहां विद्याधर जी से उच्चकोटि की शिक्षा प्राप्त की। यहां से गया जाकर अध्ययन व अध्यापन किया। यहां से क्रमशः कलकत्ता, सोरों, गड़ियाघाट गए। यहां एक दिन मन्त्रपाठ करते स्वामी जी को अलवर नरेश ने देखा तो वह उन्हें इस शर्त पर अलवर ले गए कि वह स्वामी जी से प्रतिदिन शिक्षा लेंगे तथा जिस दिन नहीं आवेंगे, उस दिन स्वामी जी अलवर छोड़ सकते हैं। शीघ्र संस्कृत सिखाने के लिए स्वामी जी ने "शब्द बोध" पुस्तक की रचना की। एक दिन राग रंग में मस्त अलवर नरेश गुरु जी के पास जाना भूल गया, बस स्वामी जी नें उसी दिन अलवर से प्रस्थान कर पुनः सोरों के गड़ियाघाट जा विराजे। यहां स्वामी जी को भयंकर रोग ने आ घेरा। स्वामी जी के शिष्य उन्हें अपनी सेवा के बल पर मौत के मुंह से वापिस लाये। अब स्वामी जी यहां से मुरसान, भरतपुर होते हुए मथुरा पहुंचे। यहां स्वामी जी ने पाठशाला खोली तथा नियमित शिक्षा दान करने लगे। पढ़ाने की उत्तम शैली के कारण शिक्षा के केन्द्र काशी से भी शिक्षार्थी स्वामी जी के पास आने लगे। स्वामी जी देश को स्वाधीन करा पुनः विश्व गुरु के रूप में देखना चाहते थे। वह जानते थे कि राजा के सुधार से लोग स्वयं ही सुधर जावेंगे। यही कारण है कि आपने राजाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। मथुरा में शास्त्रार्थ की चुनौती मिली, जिसे स्वीकार किया किन्तु यह शास्त्रार्थ कुटिलता की भेंट चढ़ गया। स्वामी जी अष्टाध्यायी और महाभाष्य नामक आर्ष ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थों को धूर्तों की कृति मानते थे। अतः स्वामी जी आर्ष ग्रन्थों के प्रचार व प्रसार में जुट गए। सन् १८५७ के भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के आप जनक थे। इस में भाग लेने वाले सभी राजा आपके शिष्य थे। यह योजना आपने अपने गुरु स्वामी पूर्णानन्द जी के आदेश से बनाई। इस योजना पर सभी शिष्य शासकों ने अमल किया। स्वामी जी एक सर्वधर्म सभा के माध्यम से भारत को एक संगठन में बांधना चाहते थे किन्तु जयपुर के राजा रामसिंह के इसमें रुचि न लेने से ऐसा सम्भव नहीं हो सका। स्वामी जी की शिक्षा की प्रसिद्धि चतुर्दिक फैल रही थी, किन्तु स्वामी जी भारत के उद्धार के लिए आर्ष ग्रन्थों के प्रसारार्थ शिष्य खोज रहे थे, इन्हीं दिनों प्रभु आदेश से स्वामी दयानन्द सरस्वती आपको शिष्य स्वरूप मिले। १९१७ वि. तदनुसार १८६० ई. को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुरु जी की इच्छानुरूप आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन किया। गुरुजी ने स्वामी दयानन्द को अपने सम विद्वान् बनाया तथा वैदिक प्रचार व स्वाधीनता आदि का बोझ अपने कन्धों से उतार दयानन्द के कन्धों पर दे डाला। इस प्रकार गुरु विरजानन्द को इस बात की खुशी थी कि जैसे शिष्य की आवश्यकता थी वह उनको अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में मिल गया। सम्वत् १९२५ वि. आश्विन की बदी त्रयोदशी सोमवार तदनुसार सितम्बर १८५८ ई. को निश्चित ही इस संसार से विदा हुए। उनके देहावसान का समाचार सुन महर्षि दयानन्द सरस्वती के मुख से निकला आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया है। आपका जीवन आर्ष ग्रन्थों के प्रचार-प्रसार को समर्पित था। जब तक सृष्टि रहेगी आपका नाम सूर्य के समान चमकता रहेगा। **पता - ११६, मित्र विहार, मण्डी डबवाली, हरियाणा**

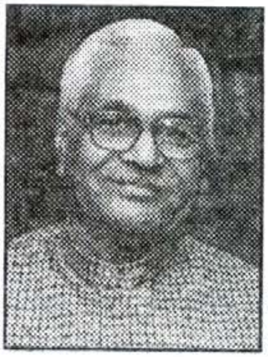

आर्य समाज के एक और सितारे का अवसान... !!

(स्मृति शेष : डॉ. धर्मपाल जी पूर्व कुलपति गु.कां.वि.वि. हरिद्वार एवं पूर्व प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा)

मैं तो एक साधारण व्यक्ति हूँ छोटी-छोटी सी बाधाओं में असहज हो जाता हूँ, परन्तु आज तो इस ज्येष्ठ श्रेष्ठ आर्यसमाज की बड़ी एवं अपूरणीय क्षति का दिवस है फिर मैं कैसे अधीन न होऊँ ? वह महान व्यक्तित्व जो आर्यसमाज के आकाश को अपनी शीतल धवल से चांदनी से रोशन कर आज सदा के लिए अस्त हो गया वह स्मरण होते ही हृदय के संतप्त भाव नेत्रों में जल के रूप में प्रवाहित होने लगते हैं।

आर्यजगत् के कवि शिरोमणि सत्यपाल पथिक द्वारा रचित पंक्तियों की प्रासंगिकता दृष्टिगत हो रही है - **"वह कौन गया है महफिल से हर आँख से आंसू बहने लगे । इस आर्यसमाज की नदिया का एक और किनारा टूट गया ।"** संभवतः उनके प्रति यही मेरे श्रद्धासुमन अर्पित करने का उपयुक्त और अंतिम उपाय है । वह महान् व्यक्तित्व डॉ. धर्मपाल जी जो आज हमारे बीच नहीं है परन्तु उनकी यादें उनके समाजोपयोगी कार्य सदा हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे। उनके उच्च विचार, सरल एवं मृदु व्यवहार तथा सादगी भरी जीवनशैली जन मानस को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित करती है। डॉ. धर्मपाल जी का जीवन स्वयं में एक प्रेरणा है, उनका जन्म उत्तर प्रदेश के बागपत (तात्कालिक मेरठ) जनपद के बडौत उपनगर में एक संभ्रान्त परिवार में १९ मार्च १९४२ को महाशय ओमप्रकाश आर्य जी व माता श्रीमती बलबीरी देवी जी के घर हुआ। अपने ९ भाईयों में सबसे बड़े एवं होनहार कुशाग्र बुद्धि बालक धर्मपाल था। प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा पैतक नगर बड़ौत में ही प्राप्त की। सन् १९६४ में कृष्णा देवी (बी.ए.) ग्राम उदयपुर जिला हापुड़ (मेरठ) के साथ परिणय सूत्र में बंध गए, पश्चात् एक नए जीवन का सूत्रपात हुआ। सन् १९६५ में आप दिल्ली में आ गए थे।

दिल्ली विश्वविद्यालय से आपने हिंदी विषय में पूरा स्नातक (एम.ए.) तथा आगरा वि.वि. से अंग्रेजी विषय में (एम.ए.) की मानन्द उपाधि प्राप्त की तत्पश्चात् आपने सेंट्रल स्कूल में अध्यापन कार्य प्रारंभ किया। इसके साथ-साथ आपने दिल्ली वि.वि. से हिन्दी विषय में डॉक्ट्रेट (पी.एच.डी.) की मानन्द उपाधि प्राप्त की। वर्ष १९६६ में आपके बड़े पुत्र विनीत तथा १९७० में अनुजपुत्र विवस्वत का जन्म हुआ। आप वर्ष १९७२ में डॉ. जाकिर हुसैन कालेज में हिन्दी विषय के प्राध्यापक नियुक्त हुए। सन् १९९३ में पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने भारत के पुरातन गौरव को पुनः स्वर्णमुखरित करने वाली, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के बलिदान की साक्षी ऐतिहासिक संस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के गरिमामयी पद कुलपति के उत्तरदायित्व को सौंपा। जिसे आपने अपनी योग्यता, नेतृत्व, पुरुषार्थ एवं कार्यकौशल से चहुँमुखी विकास की ओर अग्रसर किया। आपने १९९३ से २००१ तक लगभग ८ वर्ष के कार्यकाल में शैक्षिक सुधार के अनेक आधारभूत कार्य किये। जिनमें बालक वर्ग के अतिरिक्त बालिका वर्ग (Girls wing)को प्रारम्भ कराया। (यू.जी.सी.) से ग्रांट प्राप्त कर पर्यावरणीय-विज्ञान (एम.बी.ए.) एवं (एम.सी.ए.) कोर्स का शिक्षण प्रारम्भ कराया। यह एक नई पहल थी।

आपके द्वारा आर्यसमाज शालीमार बाग की स्थापना ने इस क्षेत्र में एक नई क्रांति प्रदान की। यह हमारे अथवा परिवार के लिए ही नहीं अपितु आर्यसमाज और क्रांति भूमि बड़ौत क्षेत्र (उ.प्र.) के लिए भी गौरव की बात है। आप समय अनुपालन के बड़े अभ्यासी एवं ईश्वर में दृढ़ विश्वासी थे। आप अत्यंत मृदुभाषी, सरल व्यवहार, लेखक, प्रभावी प्रवक्ता तथा संगठन को कुशल नेतृत्व प्रदान करने की अद्भुत क्षमता के धनी थे। आप के अनन्य मित्र डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी द्वारा ज्ञात हुआ कि एक बार बड़े पुत्र के बहुत बीमार व कमजोर होने पर डॉक्टर साहब ने अण्डे खिलाने की सलाह दी जिसके लिए आपने श्रीमती जी को स्पष्ट शब्दों में कहा कि बालक जिये या नहीं, परन्तु अण्डे नहीं खिलाऊँगा। आपके दोनों पुत्र श्री विनीत सिंह, एडमिनिस्ट्रेटर, श्री विवस्वत सिंह इंजीनियर के पद पर संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में कार्यरत हैं। दोनों पुत्रों के पास एक-एक पुत्र तथा एक-एक पुत्री हैं, क्रमशः आयु. दिविता चि. प्रचेतस एवं चि. प्राञ्जल आयु. रुचिरा हैं। आपके अनुज भ्राताओं के नाम क्रमशः सर्वश्री वेदपाल आर्य जी, श्री सुदेशपाल आर्य जी, श्री ब्रह्मपाल आर्य जी, श्री यशपाल आर्य जी, श्री यज्ञपाल आर्य जी, श्री राजपाल आर्य जी, श्री कृष्ण पाल आर्य जी एवं श्री सोहनपाल आर्य जी हैं, जो अपने विभिन्न व्यवसायों में संलग्न है। आपका पूरा परिवार महर्षि दयानन्द की विचारधारा से ओत-प्रोत रहा है।

स्वाइन फ्लू को "स्वाहा" करें

हर नया रोग नया डर लेकर आता है। जितना आप अधिक डरेंगे, रोग अधिक डराता है। मात्र इसके लक्षण, उपाय व बचाव के तरीके समझ लें। डरें, घबराएँ नहीं मात्र सावधानी-समझदारी बरतें।

लक्षण :- नाक से पानी जाना, गले में दर्द, पेट में दर्द, दस्त, अपच, कमचोरी, चक्कर आना, उल्टी, बुखार आदि इसके प्रारंभिक लक्षण है, पर बारिश के मौसम में ऐसी शिकायतें सामान्यतः रहती है, अतः साधारण सर्दी-बुखार को स्वाइन फ्लू समझकर घबराएँ नहीं। स्वाइन फ्लू में साँस लेने से भी दिक्कत होने लगती है। ४८ घंटों के अन्दर इसकी दवाई ले लें प्राणरक्षा हेतु।

उपाय व बचाव :- कुछ अहिंसक व आयुर्वेदिक पद्धतियाँ अपनाने से रोग की रोकथाम संभव है -

१. गिलोय की आधा फुट लंबी डंडी कुचलकर मिट्टी के बर्तन में रात को भिगों दे। सुबह मसलकर छानकर पानी पी लें।

२. गिलोय डंडी आधा फुट +१२ तुलसीपत्र +४ काली मिर्च पीसकर कपड़े में निचोड़कर रस को पी लें।

३. लौंग २ + तुलसीपत्र +१२ पत्ते + कालीमिर्च २ + चुटकी हल्दी + चुटकी सौंठ (या अदरक) + तीन चुटकी अज्वाइन + ६ पत्ते पुदिना (या पुदिना पाउडर) + सेंधा नमक (स्वादानुसार) + अमृतासत् (गिलोय पाउडर) आधा चम्मच सभी सामग्री २ ग्लास पानी में उबालें, एक कप रह जाने तक पकाएँ। छानकर उसमें मिश्री (यदि पित्त-उल्टी है तो) या शहद (यदि कफ है तो) मिलाकर गरम-गरम पी लें ओढ़कर सो जाएं पसीना लें।

४. नमक को लोहे के तवे में भूंज लें। शीशी में भर लें। ११ ग्लास पानी उबालें, १ चम्मच नमक (बड़ो के लिए), आधा चम्मच (छोटो के लिए) घुलने तक मिलाएँ। गरम-गरम पी लें। यह प्रयोग खाली पेट करें। १ से ३ बार प्रयोग करने से कितना भी पुराना, कैसा भी बुखार उतर जाता है।

५. लौकी (घिया) घिस लें या गोल-गोल काटकर हथलियों व तलवों पर नाखून की ओर रगड़े। क्रमशः

विशेष : उपरोक्त प्रयोग अपनाने से पूर्व चिकित्सकीय सलाह ले लें।

- जनहित में जारी

स्वस्थ एवं दीर्घायु के लिए महत्वपूर्ण जानकारी

- दीनानाथ वर्मा, सभा मंत्री

(१) उत्साही और आशावादी बनें।

(२) नियमित दिनचर्या का पालन करें।

(३) जल्दी सोकर जल्दी ब्रह्म मुहूर्त में जागें।

(४) प्रातः कर्म करके योग, आसन, प्राणायाम, यौगिक जागिंग प्रतिदिन प्रातःकाल ५ बजे से ६.३० बजे तक करें।

(५) प्रतिदिन ब्रह्मयज्ञ एवं देवयज्ञ प्रातः ७ से ८ बजे तक करें।

(६) प्रातःकाल अंकुरित अन्न एवं फलाहार लें।

(७) **आचार्य चाणक्य ने कहा है** - जो मैले-कुचैले वस्त्र पहनता है, जो दांतों को साफ नहीं करता/दुखता, जो सहता कम और खाता ज्यादा है, जो कड़वा बोलता है, जो देर तक जागता है और देर तक सोता रहता है, वो चाहे विष्णु ही क्यों न हो, तो भी लक्ष्मी उसको छोड़ देती है।

(८) प्रातः का प्रातराश राजा की तरह दोपहर का भोजन मंत्री की तरह, रात्रि का भोजन भिखारी की तरह लेना होना चाहिए।

(९) **भोजन में पांच तत्व होने चाहिए** - (अ) प्रोटीन्स (ब) खनिज लवण (स) कार्बोहाईड्रेट्स (द) वसा (ई) **विटामिन**

प्रोटीन :- दूध, गेहूं, जौ, बाजरा, चना आदि अनाज सूखे मेवें, सभी दालों में होता है।

खनिज लवण :- कच्ची सब्जियाँ, फल

कार्बोहाईड्रेट्स :- चीनी, स्टार्च (श्वेतसार, मांड) अनाज, दूध, फल, सब्जी।

वसा :- चर्बी, शरीर का ईधन है। घी, तेल और मक्खन, चीनी, शहद, गुड़।

विटामिन :-

ए = गाय का दूध, क्रीम मक्खन, हरी पत्तियों वाले शाक, सब्जियाँ।

बी१= अंकुरित बीज, खबीर, हरी सब्जियां, गेहूँ आदि अन्न ताजा मटर सेम आदि।

बी२ = दूध, हरी सब्जियां टमाटर आदि।

बी६ = अन्न के दाने, फलियां, चावल, खमीर, अनाजों, दालों।

बी १२= हरी शाक-भाजियां आदि।

सी = नीबूं, संतरा, बंदगोभी, टमाटर, शलजम आदि।

डी = दूध, मक्खन, पनीर आदि।

ई = अंकुरित गेहूँ, हरी सब्जियां, बंदगोभी, पालक, टमाटर, तिलकातेल, दूध आदि।

(१०) **टालस्टाय ने मांसाहार के संबंध में लिखा है** - कुछ लोग कहते हैं कि मांसाहार अनिवार्य नहीं तो किन्हीं दशाओं में आवश्यक है। मैं कहता हूं कि यह आवश्यक नहीं है। मांसाहार से मनुष्य की पाशविक वृत्ति बढ़ती है। काम उत्तेजित होता है तथा व्यभिचार करने एवं शराब पीने की इच्छा होती है। मांस खाकर सदाचारी बनना असंभव है।

(११) दोपहर के भोजन में मिताहारी बनें।

(१२) सप्ताह में कम से कम दो बार शरीर की तेल मालिश करें।

(१३) संतोषी, संयमी और स्थितप्रल बनकर प्रवृत्तिमय जीवन बिताएं।

(१४) परोपकार और सेवा के कार्यों में व्यस्त रहें, हमेशा कार्यरत रहें।

(१५) अधिक आय वाली स्त्रियों के साथ रति, रात्रि में दही खाना, मैथुन की अधिकता, पेटूपन त्याग देना चाहिए।

(१६) शोक, चिंता, उद्वेग, भय, क्रोध - आयु कम करने वाले शत्रु हैं।

(१७) स्वाध्याय, ईश्वर चिंतन, आत्मचिंतन, वेदाध्ययन दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन के आधार है।

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी से सफेद दाग का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

सफेद दाग चमड़ी का भयावह रोगा है, जो रोगी की शक्ल सूरत प्रभावित कर शारीरिक के बजाय मानसिक कष्ट ज्यादा होता है। इस रोग में चमड़े में रजक पदार्थ जिसे पिगमेंट मेललिन कहते हैं, उसकी कमी हो जाती है, चमड़ी को प्राकृतिक रंग प्रदान करने वाले इस पिगमेंट की कमी से सफेद दाग पैदा होते हैं।

यह कर्म विकृति पुरुषों की बजाय महिलाों में अधिक होती है। ल्यूकोडर्मा आज बेहद आम समस्या है, जिसके कारण का पूरी तरह पता नहीं चल सकता है, फिर भी होमियो चिकित्सा द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। यह एक प्रकार का चर्म रोग है जिससे शरीर के अंदरुनी भाग को कोई भी नुकसान नहीं पहुंचता है।

कोढ़ नहीं है सफेद दाग :-

त्वचा पर सफेद दाग की समस्या को कोढ़ (लेप्रोसी) समझने की भूल नहीं करना चाहिए, हालांकि कोढ़ की शुरुवात में भी त्वचा पर सफेद दाग होते हैं लेकिन वे छूने से संक्रमित नहीं होते। सफेद दाग एक प्रकार का चर्म रोग है। चिकित्सा विज्ञानियों ने इस रोग के कारणों का अनुमान लगाया है। पोषक तत्वों की कमी, फंगल संक्रमण, शरीर में कोई भी भाग जल जाने अथवा आनुवांशिक कारणों से यह रोग पीढ़ी दर पीढ़ी चलता है।

पेट के रोग, लीवर का ठीक से कार्य नहीं करना, मानसिक तनाव, छोटी और बड़ी आंत में कीड़े होना, टाइफाइड बुखार, शरीर के पसीना होने के सिस्टम में खराबी आदि कारणों से यह रोग पैदा हो सकता है।

होपियोपैथी उपचार :- कई रोगी इस रोग का उपचार कराकर ठीक हो गए हैं। कई रोगियों का उपचार चल रहा है। होमियोपैथी चिकित्सा कारगर एवं सुरक्षित माना गया है। इसका इलाज बहुत प्रभावी है, और शरीर के प्रभावित स्थान को त्वचा के रंग जो सामान्य बना देता है। इससे रोगी का मानसिक तनाव समाप्त हो जाता है, और उसके अन्दर आत्मविश्वास बढ़ जाता है।

रोगी के पिता का कथन :- मेरी लड़की नीतू साहनी जिसकी आयु ७ वर्ष है, उसके गले, माथे और पीठ पर सफेद दाग हो गया था। उसे डॉ. त्रिवेदी के टाटीबंध अस्पताल में होमियोपैथी ईलाज लगभग दो साल तक कराया, मेरी लड़की का सफेद दाग का रोग पूरी तरह से ठीक हो गया है। *रणजीत साहनी (पिता) मोहबा बाजार, रायपुर।*

प्रमुख औषधियाँ :- चाइना, नक्स्वोमिका, सल्फर, आर्सेनिक, एसिडनाइट्रिक, आर्सेनिकम सल्फ, सीपिया, फेरम मेट आदि औषधियाँ होमियो चिकित्सक की सलाह से ली जा सकती है।

पथ्य :- बथुआ की सब्जी, अखरोट, अल्फाल्फा, छाछ, हरी सब्जियों का सेवन करना चाहिए।

अपथ्य :- दूध व मछली साथ साथ नहीं लेना चाहिए, मिठाई रबड़ी दूध व दही एक साथ नहीं लेना चाहिए। गरिष्ठ भोजन, खटाई, आचार, अधिक नमक, मुर्गा मटन, व अंडा का सेवन नहीं करना चाहिए।

पता - त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबन्ध रायपुर (छ.ग.)

जो हाथ सेवा के लिए उठते हैं वे प्रार्थना करने वाले होठों से अधिक पवित्र हैं।

समाचार प्रवाह

श्रावणी उपाकर्म, उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर में सम्पन्न

रायपुर। दिनांक ७ अगस्त २०१७ को वैदिक गुरुकुल दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर के सात नवप्रवेशी बटुकों का उपनयन संस्कार एवं वेदारम्भ संस्कार प्रातः ९ बजे से अपराह्न १२ बजे तक श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में धूमधाम से सम्पन्न हुआ। व्रतबंध एवं वेदारम्भ संस्कार के पुरोहित थे पं. संजय शास्त्री एवं पं. मुकेश पाठक (अथर्ववेदाचार्य) उपस्थित थे। सात बटुक जिनका व्रतबंध संस्कार सम्पन्न हुआ उनके नाम ब्रह्मचारी रुपेन्द्र, ब्रह्मचारी मोहित, ब्रह्मचारी कृष, ब्रह्मचारी पूर्णांक, ब्रह्मचारी अभय, ब्रह्मचारी शुभम् ब्रह्मचारी विवेक। इस पावन अवसर में सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, श्री सुभाषचन्द्र श्रीवास्तव प्रधान आर्यसमाज टाटीबन्ध, डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी मंत्री आर्यसमाज टाटीबन्ध, वरिष्ठ आर्य सभासद् श्री केवल कृष्ण विज एवं श्री लक्ष्मण प्रसाद वर्मा के साथ श्री लोकनाथ आर्य प्रबंधक, श्री खगेश्वर प्रधान सपरिवार एवं श्री आनन्द कुमार भोई अंतरंग सदस्य सभा उपस्थित रहे। बटुकों के माता-पिता एवं परिजन भी उपस्थित रहे। नवबटुकों को दीक्षा प्रदान किया गया। कार्यक्रम में शताधिक आर्यजन उपस्थित थे। ***- कार्यक्रम से लौटकर श्री दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री***

ग्राम कांसा में आर्यसमाज द्वारा योग दिवस मनाया गया

कांसा। २१ जून २०१७ को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आर्यसमाज कांसा (डभरा) में सुबह ५.३० से ७.३० बजे तक आचार्य रणवीर आर्य जी के निर्देशन में योग दिवस मनाया गया। मुख्य अतिथि श्री जगदेव प्रसाद पटेल से.नि. खनन अधिकारी बड़ेगौटिया कोटमी, डॉ. श्री हेमंत कुमार साहू (चिकित्सा सेवा केन्द्र अधिकारी डभरा), श्री फत्तुलाल साहू (भू.पू. सेना ग्राम कांसा) एवं श्रीमती तुलसी देवी साहू (डीडीसी) के द्वारा वैदिक विधि से दीप प्रज्जवलित करके शिविर का शुभारम्भ किया गया। आचार्य रणवीर जी के निर्देशन पर आर्यसमाज कांसा के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार चन्द्रा, श्री सोनसाय बरेठ, श्री सुखीराम साहू, श्री कौशल प्रसाद आजाद जी के द्वारा शीर्षासन व प्राणायाम, योगिंग, जांगिग सहित योग की सभी क्रियाओं का प्रदर्शन किया गया। ग्राम कांसा, कटौद, कोटमी आदि करीब पांच गांवों से लगभग सवा सौ लोगों ने एक साथ मिलकर योग अभ्यास किया, जिसमें बच्चे, बूढ़े, जवान, सभी उम्र के लोग सम्मिलित थे। ***संवाददाता : आचार्य रणवीर आर्य***

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध के विस्तारीकरण में निर्मित तीन कक्षों का लोकार्पण सम्पन्न

रायपुर। अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर विद्यालय के प्रथम तल में कक्ष क्र. २४ अमर शहीद भगतसिंह कक्ष का लोकार्पण किया गया, साथ ही साथ विद्यालय द्वितीय तल में निर्मित कक्ष क्र.२५ शहीद चन्द्रशेखर आजाद कक्ष एवं कक्ष क्र. २६ पं. रामप्रसाद बिस्मिल कक्ष का लोकार्पण कार्यक्रम पूर्वाह्न ११ बजे दिनांक १५ अगस्त २०१७ को सम्पन्न हुआ। जिसके मुख्य अतिथि माननीय श्री सोमप्रकाश गिरी उपप्रधान सभा एवं पूर्व विधायक मरौद, अध्यक्षता सभा आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा किया गया। विशिष्ट अतिथि के रुप में श्री दयाराम वर्मा उपप्रधान सभा एवं प्रधान आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, श्री दीनानाथ वर्मा मंत्री सभा, श्री चतुर्भुज कुमार आर्य उपमंत्री सभा, श्री दिलीप आर्य उपमंत्री (कार्यालय) सभा। कार्यक्रम में श्री सुभाषचंद्र श्रीवास्तव प्रधान, डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी मंत्री, श्री लक्ष्मण प्रसाद वर्मा सहित समस्त पदाधिकारी एवं सदस्य आर्यसमाज टाटीबन्ध रायपुर उपस्थित रहे। श्री विनोदसिंह प्राचार्य सहित समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएँ उपस्थित रही।

राजधानी रायपुर में श्रावणी उपाकर्म, ऋषि तर्पण एवं वेदप्रचार यज्ञ सम्पन्न

रायपुर। आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर एवं महिला आर्यसमाज जवाहर नगर द्वारा आयोजित वेदप्रचार यज्ञ दिनांक ७ अगस्त से १६ अगस्त २०१७ तक सम्पन्न हुआ। श्रावणी पर्व दिनांक ७ अगस्त २०१७ को आर्यसमाज बैजनाथ पारा रायपुर में प्रातः ८.३० बजे से १०.३० तक कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। दोप. ३ से ५ बजे तक ग्राम टेमरी (फुण्डर के पास, वी.आई.पी. रोड) रायपुर श्रीराम मंदिर में वेद प्रचार यज्ञ का आयोजन किया गया। दिनांक ८ अगस्त २०१७ को आर्यसमाज राजेन्द्रनगर कटोरा तालाब रायपुर के तत्वावधान में राजराजेश्वरी दुर्गा मंदिर कटोरातालाब में वेद प्रचार यज्ञ आयोजित किया गया। दिनांक ९ अगस्त २०१७ को दोप. ३ से ५ बजे तक मणि माता जी के घर रामसागरपारा रायपुर में वेदप्रचार यज्ञ सम्पन्न हुआ। दिनांक १० अगस्त २०१७ को दोप. ३ से ५ बजे तक श्रीमती राजखेमका गुढ़ियारी रायपुर में कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिनांक ११ अगस्त २०१७ को दोप. ३ से ५ बजे तक श्रीमती चित्राहरिरामाणी के घर में कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिनांक १२ अगस्त २०१७ को प्रातः ९ से ११ बजे तक श्रद्धानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय संतोषीनगर रायपुर में कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विद्यालयके समस्त स्टाफ के साथ छात्र-छात्राओं और आर्यसमाज बैजनाथपारा के पदाधिकारी उपस्थित रहे। दिनांक १२ अगस्त २०१७ को दोप. ३ से ५ बजे तक श्री विनोद जायसवाल के घर देवेन्द्र नगर रायपुर में कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिनांक १३ अगस्त २०१७ रविवार को प्रातः ८.३० से १०.३० बजे तक आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर में साप्ताहिक सत्संग के साथ वेद प्रचार यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमें शताधिक श्रद्धालुजन उपस्थित रहे। दिनांक १३ अगस्त २०१७ दोप. ३ से ५ बजे तक श्री सुरेश बजाज के घर पंडरी रायपुर में कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिनांक १४ अगस्त २०१७ को दोप. ३ से ५ बजे तक श्री मनीष वाधवानी के घर अवंति विहार रायपुर में वेदप्रचार यज्ञ सम्पन्न हुआ। दिनांक १५ अगस्त २०१७ दोप. ३ से ५ बजे श्रीमती प्रभादेवी के घर में खम्हारडीह रायपुर में वेदप्रचार यज्ञ सम्पन्न हुआ। दिनांक १६ अगस्त २०१७ को प्रातः ८.३० से १०.३० तक आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर में वेदप्रचार यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। आमंत्रित विद्वान के रुप में प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. नंदकुमार जी आर्य (सतना म.प्र.) के साथ श्री भुनेश्वर मानिकपुरी तबलावादक तथा पं. सूरज आर्य एवं पं. सुशील स्वामी पुरोहितद्वय आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर उपस्थित रहे। उपरोक्त कार्यक्रम में महिला आर्यसमाज जवाहर नगर के प्रधाना श्रीमती रामेश्वरी देवी, मंत्री श्रीमती मंजू अश्पल्या एवं तारामाता आदि का विशेष सहयोग रहा, इसके अतिरिक्त आर्यसमाज कटोरातालाब, आर्यसमाज टाटीबन्ध, आर्यसमाज संतोषीनगर एवं महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर के विशेष सहयोग रहा।

संवाददाता : कार्यक्रम से लौटकर सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा

आर्यसमाज राजेन्द्रनगर कटोरातालाब रायपुर के विस्तारीकरण में निर्मित दो कक्षों का लोकार्पण सम्पन्न

रायपुर। दिनांक १४ अगस्त २०१७ को पूर्वाह्न ११ बजे से अपराह्न १ बजे तक आर्यसमाज राजेन्द्रनगर कटोरा तालाब में वेदप्रचार यज्ञ सम्पन्न हुआ। इसी समय विस्तारीकरण में निर्मित दो कक्ष का लोकार्पण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसके मुख्य अतिथि सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव जी आर्य रहे एवं विशिष्ट अतिथि के रुप में श्री दयाराम वर्मा उपप्रधान सभा, श्री दीनानाथ वर्मा मंत्री सभा, श्री चतुर्भुज कुमार आर्य उपमंत्री सभा, श्री दिलीप आर्य उपमंत्री (कार्यालय) सभा उपस्थित रहे। अध्यक्षता श्री दयालदास जी आहूजा प्रधान एवं निवेदक श्री तापेश्वर कुमार शर्मा मंत्री आर्यसमाज राजेन्द्रनगर कटोरातालाब रहे। इस शुभअवसर महर्षि दयानन्द विद्यालय राजेन्द्रनगर के समस्त शिक्षिकाएँ उपस्थित रहीं साथ ही आर्यसमाज राजेन्द्रनगर कटोरातालाब के पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे।

संवाददाता : कार्यक्रम से लौटकर सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा

तुलाराम आर्य हायर सेकेण्डरी स्कूल लवन में स्वतन्त्रता दिवस सोल्लास सम्पन्न

लवन। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित तुलाराम आर्य हायर सेकेण्डरी स्कूल लवन के प्रांगण में ७१ वाँ स्वतन्त्रता दिवस समारोह सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप श्री पारस ताम्रकार पार्षद द्वारा ध्वाजारोहण किया गया। साथ में ग्राम के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं वरिष्ठगण ग्रामवासी, पालकगण, प्राचार्य, शिक्षक-शिक्षिकाएँ, छात्र-छात्राएँ एवं अन्य लोग उपस्थित थे। विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, गीत, भाषण एवं नृत्य प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में लगभग ३०० लोग उपस्थित रहे।

संवाददाता : प्राचार्य, तु.आ.हा.से.स्कूल लवन

धमतरी विद्यालय में स्वतन्त्रता दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया

धमतरी। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित स्वामी अग्निदेव आर्य कन्या प्राथमिक शाला व डी.ए.वी. स्कूल मकई चौक धमतरी के प्रांगण में ७१ वाँ स्वतन्त्रता दिवस समारोह सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री अजय गोस्वामी प्रधान आर्यसमाज मकई चौक धमतरी द्वारा ध्वाजारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। साथ में पालकगण, प्राचार्य, शिक्षक-शिक्षिकाएँ, छात्र-छात्राएँ एवं अन्य लोग उपस्थित थे। विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, गीत, भाषण एवं नृत्य प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में लगभग २५० लोग उपस्थित रहे।

संवाददाता : प्राचार्य, स्वामी अग्निदेव आर्य क.प्रा.शाला

कर्णवेध संस्कार सम्पन्न

__पालीडीह (जशपुर)।__ आर्यसमाज पालीडीह में दिनांक ७ अगस्त २०१७ श्रावणी पर्व (रक्षा बंधन) के अवसर पर पांच कन्याओं जिसमें कु. सुप्रिया, कु. ज्योत्सना, कु. दिव्यांशु (पिता श्री देवकुमार आर्य पालीडीह), कु. लवली (स्व. हेमन्त कुमार आर्य), सोमिया (पिता श्री रुपेन्द्र आर्य) का कर्णभेद संस्कार आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम वैदिक यज्ञ, प्रवचन का भी कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर श्री रविशंकर आर्य उपमंत्री सभा, किरीतराम आर्य (झक्कड़पुर), शोभाराम आर्य, रामेश्वर आर्य (पंगसुवा), श्री बीरबल मुनि भैंसबुड़ी, कु. चम्पा यादव, श्री गजेन्द्र यादव, श्री दयाराम आर्य पालीडीह, श्री जागेश्वर आर्य, त्रिलोचन आर्य, जयदेव आर्य सहित परिवारजन एवं ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

संवाददाता : रविशंकर आर्य, आर्यसमाज पालीडीह

तुलाराम आर्य हायर सेकेण्डरी स्कूल कूंरा में स्वतन्त्रता दिवस सोल्लास सम्पन्न

कूंरा। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित तुलाराम आर्य हायर सेकेण्डरी स्कूल कूंरा के प्रांगण में ७१ वाँ स्वतन्त्रता दिवस समारोह सोल्लास सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर ग्राम के पार्षद, वरिष्ठगण निवासी, पालकगण, प्राचार्य, शिक्षक-शिक्षिकाएँ, छात्र-छात्राएँ एवं अन्य लोग उपस्थित थे। विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, गीत, भाषण एवं नृत्य प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में लगभग ४०० लोग उपस्थित रहे।

संवाददाता : प्राचार्य, तु.आ.हा.से.स्कूल कूंरा

सभा कार्यालय दुर्ग में स्वतन्त्रता दिवस समारोह सोल्लास सम्पन्न

दुर्ग। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, विद्युत सुरक्षा विभाग, आर्यसमाज आर्यनगर के संयुक्त तत्वावधान में ७१वाँ स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर प्रातः ८.३० बजे ध्वजारोहण का कार्यक्रम सभा कार्यालय प्रांगण में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सभा कार्यालय के समस्त कर्मचारीगण, विद्युत सुरक्षा विभाग के समस्त कर्मचारीगण व आर्यसमाज आर्यनगर के समस्त पदाधिकारी व सदस्यगण उपस्थित थे। *संवाददाता : निजी संवाददाता*

टाटीबन्ध रायपुर में स्वतन्त्रता दिवस कार्यक्रम सम्पन्न

रायपर । दिनांक १५ अगस्त २०१७ को स्वतन्त्रता दिवस कार्यक्रम महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध स्थित महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध में प्रातः ८.३० बजे राष्ट्र ध्वज उत्तोलन के साथ कार्यक्रम प्रारंभ होकर सांस्कृतिक बहुत आकर्षक ढंग से सम्पन्न हुआ, जिसमें सहस्राधिकजन उपस्थित रहे।

झण्डोत्तोलन सभा आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा किया गया, जिसमें सभा मंत्री दीनानाथ वर्मा, श्री चतुर्भुज कुमार आर्य उपमंत्री, श्री दिलीप आर्य उपमंत्री कार्यालय, श्री सुभाषचन्द्र श्रीवास्तव प्रधान आर्यसमाज टाटीबन्ध, डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी मंत्री, श्री लक्ष्मण प्रसाद वर्मा वरिष्ठ सदस्य सहित आर्यसमाज टाटीबन्ध के समस्त पदाधिकारी, श्री विनोद सिंह प्राचार्य सहित समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएँ एवं लगभग ८०० छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त छात्र-छात्राओं के पालकगण भी अधिक संख्या में उपस्थित रहे। सांस्कृतिक कार्यक्रम अत्यंत मनोहारी एवं प्रभावशाली रहा।

श्री सोमप्रकाश गिरि उपप्रधान सभा द्वारा अपने उद्बोधन में यह कहा कि १५ अगस्त १९४७ को हमें जो आजादी मिली है, उसके लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा है तथा बहुत कुर्बानी देनी पड़ा।

श्री दीनानाथ वर्मा मंत्री सभा द्वारा अपने उद्बोधन में यह कहा गया कि दिनांक १५ अगस्त १९४७ को हमें जो आजादी मिली वह खण्ड-खण्ड में मिली तथा अंग्रेजों के द्वारा दिये गये सशर्त सत्ताहस्तान्तरण रहा है। फूट डालो और राज करो यह अंग्रेजों की नीति थी, उसी के तहत जाते जाते अंग्रेजों ने भारत के महत्वपूर्ण हिस्से को अलग राष्ट्र पाकिस्तान बनाकर भारतवासियों को हमेशा के लिए संकट में डाल दिया।

आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान ने अपने उद्बोधन में यह कहा कि स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वाले समस्त क्रांतिकारियों में से ८५ प्रतिशत महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुयायी थे। प्रधान जी ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए प्रतिभागी समस्त छात्र-छात्राओं एवं उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए अपना योगदान देने वाली ४ शिक्षिकाओं के लिए १० हजार रुपये का नगद पुरस्कार प्रदान किया गया। विद्यालय द्वारा उत्तरोत्तर उन्नति की ओर परीक्षाफल देने विषयक प्रशंसा करते हुए सभा प्रधान ने एक ३२ सीटर बस विद्यालय के लिए प्रदान करने की घोषणा किया गया, जिसके लिए विद्यालय परिवार ने धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

संवाददाता : कार्यक्रम से लौटकर श्री दीनानाथ वार्म मंत्री

आर्यसमाज गोंड़पारा बिलासपुर का निर्वाचन सम्पन्न

बिलासपुर । आर्यसमाज गोंड़पारा बिलासपुर का त्रैवार्षिक निर्वाचन रविवार २० अगस्त २०१७ को पं. जयदेव शास्त्री के सान्निध्य में सर्वसम्मति से पदाधिकारी, अंतरंग सदस्य एवं संरक्षक चुने गए। जिसमें मुख्य रुप से प्रधान श्री ज्योतिर्मय आर्य, मंत्री श्री सुदर्शन जायसवाल, कोषाध्यक्ष श्री गोपालदास चावला समस्त पदाधिकारियों को छ.ग. प्रां. आ. प्रति. सभा की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ व बधाईयां।

संवाददाता : सुदर्शन जायसवाल मंत्री

टुन्नीलाल आर्य ने मनाया अपना हीरक जयन्ती "जन्मोत्सव"

दुर्ग । दिनांक १९-८-२०१७ शनिवार को आर्यसमाज के आर्यनगर के वरिष्ठ एवं सक्रिय कार्यकर्ता श्री टुन्नीलाल जी आर्य ने अपने स्वर्णिम जीवन के पचहत्तरवें जन्म दिवस कसारीडीह दुर्ग स्थित अपने निवास स्थल में बड़े उत्साह से मनाया।

इस अवसर पर आयुष्काम यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें वेद की मंगलमयी ऋचाओं द्वारा सभा के यशस्वी प्रधान आचार्य अंशुदेव जी आर्य ने यज्ञानुष्ठान को सुसम्पन्न कर उल्लासमय जीवन का आशीर्वचन प्रदान किया।

इस अवसर पर पारिवारिकजनों की विशाल उपस्थिति रही। छ.ग. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के श्री दिलीप आर्य उपमंत्री कार्यालय एवं मुख्य अधिष्ठाता के साथ सभा कार्यालय के सदस्यगण व अन्य आर्यजनों सहित सभी ने उपस्थित होकर यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान कर श्री आर्यजी के सुखमय दीर्घ जीवन हेतु मंगलकामनाएँ की।

- निजी संवाददाता

"श्रुति शास्त्री ने जीता नेशनल में गोल्ड मेडल"

भिलाई । गत दिनों चेन्नई के जे.जे. इंडोर स्टेडियम में आयोजित राष्ट्रीय कराते प्रतियोगिता में भिलाई स्थित शकुन्तला विद्यालय में अध्ययनरत कु. श्रुति शास्त्री (सुपुत्री धर्माचार्य विद्यानिधि शास्त्री सुपेला) ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करती हुई स्वर्ण पदक प्राप्त कर विद्यालय, माता-पिता एवं भिलाई नगर को गौरवान्वित किया है।

इस कीर्तिमान को प्राप्त करने में छात्रा की असीम क्षमता के साथ-साथ उसके कराते एकेडमी के प्रशिक्षक श्री आर.के. गुप्ता के कुशल निर्देशन एवं प्रशिक्षण का भी योगदान है। छ.ग. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार की ओर से कु. श्रुति शास्त्री के उज्ज्वल भविष्य की ढेर सारी शुभकामनाएँ।

- निजी संवाददाता

आर्य दैनन्दिनी २०१८ (डायरी)

जैसा कि आप सभी को विदित है कि आर्य प्रकाशन हर वर्ष आर्य दैनन्दिनी का प्रकाशन करता है, जिसमें आर्यसमाज से संबंधित संन्यासी, विद्वान्, विदुषी, भजनोपदेशक, आर्यसमाज तथा गुरुकुलों के नाम, दूरभाष नम्बर सहित प्रकाशित करता है। आपसे निवेदन है कि आप अपने नाम के साथ दूरभाष व अपना पता २५ अगस्त २०१७ तक डाक से अथवा ई-मेल पर भेज सकते हैं। जिससे सही नम्बर प्रकाशित हो सके। कई विद्वानों के नम्बर बदल गये हैं, अतः आप सभी से निवेदन है कि आप सब अपना नया नम्बर और पता अवश्य भेजें।

पता : **संजीव आर्य (प्रबंधक)**

आर्य प्रकाशन, ८१५, कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-११०००६, दूरभाष : ०११-२३२३३२८०,
चलभाष : ९८६८२४४९५८, ई-मेल : **aryaprakashan@gmail.com**

डी.ए.वी. नन्दिनी में मना ७१वाँ स्वतन्त्रता दिवस

नन्दिनी । डी.ए.वी. इस्पात पब्लिक स्कूल नन्दिनी माइन्स के विशाल प्रांगण में १५ अगस्त स्वतन्त्रता दिवस के शुभ अवसर पर महासमारोह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री टी.जी. उल्लास कुमार सर (डी.जी.एम.नन्दिनी) के कर कमलों से हमारी आन-बान-शान का प्रतीक तिरंगा झण्डे का आरोहण किया गया। इस अवसर पर अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए उन्होने कहा कि गत ७० वर्षों में हमने विकास की अनगिनत ऊंचाईयाँ छुई है, हमने विश्व मंच पर अपने आप को साबित किया है, अभी भी कई चुनौतियां हमारे सामने खड़ी है। हमें उनका भी सामना बड़ी मजबूती से करना है। इस ऐतिहासिक क्षण में विद्यालय के प्राचार्य श्री राजशेखर जी पालीवाल ने अपने मार्मिक उद्‌बोधन में उपस्थित जनसमूह को सचेत करते हुए कहा कि यह मत सोचो कि हमें देश ने क्या दिया बल्कि यह सोचो की हम देश को क्या दे रहे हैं ? यह महत्वपूर्ण प्रश्न है लाखों बलिदानों के बाद पाई आजादी की हिफाजत हमें कैसे करनी है ? हम किस तरह दुनियां में इस देश का गौरव बढ़ा सकते हैं, यह विचार करने का दिन है आज।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण में विद्यालय के चारों सदनों की अन्तर सदन 'राष्ट्र भक्ति गायन स्पर्धा' रखी गई थी, जिसमें बड़े उत्साह से छात्र-छात्राओं ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया, इस स्पर्धा में 'आदित्य सदन' ने प्रथम स्थान ग्रहण किया, द्वितीय स्थान 'अग्नि सदन' एवं तृतीय स्थान 'अंगिरा सदन' को मिला।

इस अवसर पर बारबरद स्थित बाल्मिकी समाज की बस्ती में विद्यालय की ओर से मिष्ठान एवं फल वितरण किया गया। ***संवाददाता : प्राचार्य, डी.ए.वी. इ.प.स्कूल नन्दिनी***

श्रद्धानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय संतोषीनगर रायपुर में स्वतन्त्रता दिवस समारोह सम्पन्न

रायपुर। दिनांक १५ अगस्त २०१७ को प्रातः ९ बजे श्रद्धानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय संतोषीनगर रायपुर में झण्डा वंदन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री दयाराम वर्मा प्रधान आर्यसमाज बैजनाथ पारा रायपुर सहित पदाधिकारीगण श्री के.आर. श्रीवास, श्री सी.एल. यादव, श्री सुशीलपुरी गोस्वामी आदि उपस्थित रहे। विद्यालय का संस्थापक श्री बी.पी. शर्मा सहित समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएँ एवं छात्र-छात्राएँ शताधिक संख्या में उपस्थित रहे। सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा सम्पन्न हुआ, जिसमें भाषण, कविता, गीत आदि प्रस्तुत किये गये। प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। ***संवाददाता : प्राचार्य श्रद्धानन्द उ.मा. विद्यालय संतोषीनगर, रायपुर***

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 10781002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।**

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबंध रायपुर में सम्पन्न स्वतन्त्रता दिवस एवं लोकार्पण समारोह के अवसर पर उपस्थित सभा के पदाधिकारीगण, शिक्षक-शिक्षिकाएँ व छात्र-छात्राएँ

तुलाराम आर्य विद्यालय लवन में सम्पन्न स्वतन्त्रता दिवस समारोह की झलकियाँ

CHH-HIN/2006/17407 सितम्बर 2017 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग / 99/2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/1-170/CORR/CH-4/2017-18-19

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001